मूल्य रु। ५-००

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

श्री स्वामिनारायण

मासिक

सलंग अंक ९१ ● नवम्बर-२०१४

सर्वोपरी छपैयाधाम में
प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्षता में
प्रथम युवा सत्संग शिबिर

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

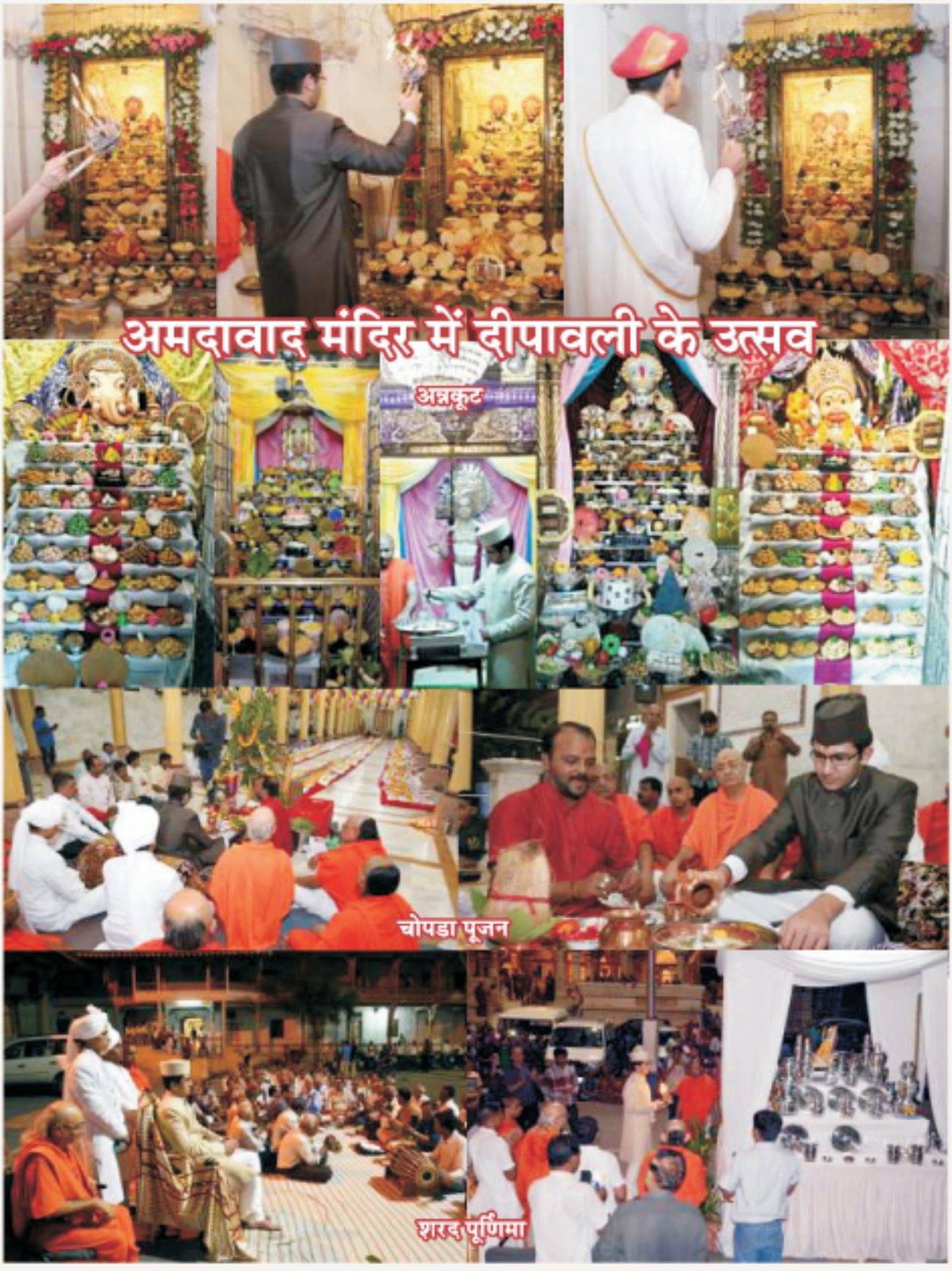
अमदावाद मंदिर में दीपावली के उत्सव
अन्नकूट
चोपडा पूजन
शरद पूर्णिमा

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ८ ● अंक : ९१

नवम्बर-२०१४

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	मारु देश के मोटा भक्त	०६
०४.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०८
०५.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	११
०६.	हरिभक्तों के वंशजो को सुख देते भगवान के वंशज	२१
०७.	सत्संग बालवाटिका	२२
०८.	भक्ति सुधा	२४
०९.	सत्संग समाचार	२७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४११५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

संवत् २०७१ का वर्ष बड़े सुंदर ढंग से प्रारंभ हुआ । चातुर्मास भी पूरा हुआ । चातुर्मास में जितना होसकी उतनी भजन-स्मरण-कीर्तन-कथा श्रवण इत्यादि किये, वही अपने जीवन के लिये उपयोगी है. महाराज का निश्चय तथा माहात्म्य आप लोग दृढ रखियेगा ।

जिन्हे भगवान के माहात्म्य के साथ दृढ आश्रय हो उनके अन्तःकरण में जागतिक माया का उद्‌भव नहीं होता, लेकिन जिनके मनमें इससे विपरीत अन्यत्र आश्रय प्राप्त हो उनके जीवन में दुःख ही होता है । जिस तरह कच्चा सत्संगी होतो उसे कुसंगी डगमगाने का प्रयास करता है लेकिन जो पक्का सत्संगी होगा तो उसे कोई डगमग नहीं कर सकता, यदि कोई उसके प्रति या मूल स्थान के प्रति खराब बोलता है तो बर्दास्त नहीं कर सकता । जिन्हे अपन इष्टदेव में दृढ भाव हो, परिक्व बुद्धि हो उसे किसी प्रकार का लोभ दिया जाय तो उसे वह स्वीकार नहीं करता । अन्तःकरण में विचार नहीं आने देता बल्कि उसके विचार और दृढ हो जाते हैं । भक्ति पुष्ट हो जाती है । लेकिन जीवन मन में दृढ भाव न हो, भक्ति परपक्व न हो तो वह डगमगाजाता है और दुःखी होता है जो जीव परिपक्व हो गया हो, भगवान का दृढ आश्रय प्राप्त कर लिया हो उसे किसी भी स्थिति में डिगाया नहीं जा सकता, माया उसे पीडाकारण नही बनती । जिन्हें भगवान में पूर्ण निश्चय हो गया है उन्हें माया किसी भी स्थिति में दुःख देने में समर्थ नहीं होती (वच. लोया. १०)

इस लिये भक्तों ! हमें श्रीहरि का निश्चय करके सम्पूर्ण परिपक्व हो जाना चाहिये । ऐसा करने से माया पीड़ा कारक नही होगी । इसके लिये उपरोक्त वचनामृत का सदा मनन, निदिध्यासन कीजियेगा ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अक्टूबर-२०१४)

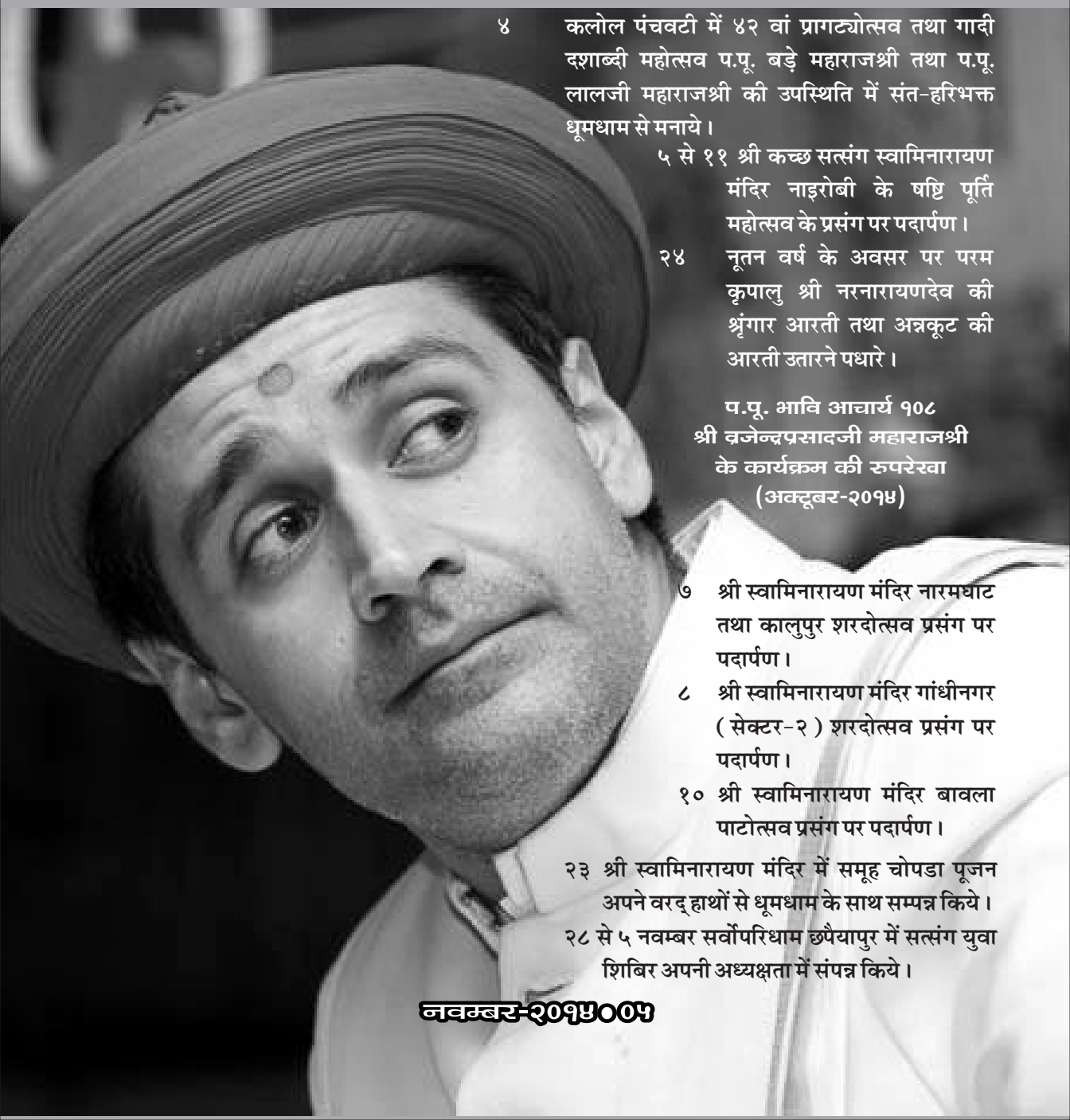

४ कलोल पंचवटी में ४२ वां प्रागट्योत्सव तथा गादी दशाब्दी महोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में संत-हरिभक्त धूमधाम से मनाये।

५ से ११ श्री कच्छ सत्संग स्वामिनारायण मंदिर नाइरोबी के षष्टि पूर्ति महोत्सव के प्रसंग पर पदार्पण।

२४ नूतन वर्ष के अवसर पर परम कृपालु श्री नरनारायणदेव की श्रृंगार आरती तथा अन्नकूट की आरती उतारने पधारे।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (अक्टूबर-२०१४)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर नारमधाट तथा कालुपुर शरदोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) शरदोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१० श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर में समूह चोपडा पूजन अपने वरद् हाथों से धूमधाम के साथ सम्पन्न किये।

२८ से ५ नवम्बर सर्वोपरिधाम छपैयापुर में सत्संग युवा शिबिर अपनी अध्यक्षता में संपन्न किये।

मारु देश के मोटा भक्त

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने संप्रदाय में सर्व प्रथम अहिंसा यज्ञ जेतलपुर में किये । १८ दिन तक चलने वाली इस यज्ञ में दूर के प्रान्तो से भक्त आये । उस समय दुष्काल चल रहा था । इसलिये श्रीजी महाराजने बडी उदार भारना से जो चक्रवर्ती राजा के लिये भी संभव नहीं था इस तरह सभी को पक्का भोजन करवाया । स्वामिनारायण के यज्ञ की धूम तथा लड्डू के स्वाद की प्रशंसा करते हुये लोग थकते नहीं थे ।

उस समय अमदावाद से ३०० कि.मी. दूर से (मारु देश - मारवाडसे) आकर लोग दुष्कालकी पीडा के कारण यहाँ रुके हुये थे । ऐसे भजन तथा भोजन के अभाव से सत्संग का उन्हें भी रंग लग गया । आये हुये १०० से भी अधिक लोग सत्संग के वर्तमान को ग्रहण किये थे । उसमें एक हरिभक्त पार्षद के रुप में श्रीजी महाराज की सेवा में लग गया । वह शूरवीर छत्तीस की छाती वाला परम भक्त वीर भगुजी के नाम से जाना गया । एक साधु हो गये जिनका नाम निर्दोषानंद स्वामी महाराजने रखा । वे महाराज के साथ ही रहते थे । जो सत्संग में विचरण करते रहे । उन्होंने जीरागढ के हनुमानजी तथा धरमकडाका (कच्छ) के हनुमानजी की प्राण प्रतिष्ठा की थी । वे नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे । वीर भगुजी तथा निर्दोषानंद स्वामी का परिचय समग्र संप्रदाय में सभी जानते हैं । निर्दोषानंद स्वामी भिनमाल तहसील के गोलिया गाँव के थे तथा वीर भगुजी उस गाँव से तीन कि.मी. दूर मेरशीम गाँव के थे ।

जेतलपुर का यज्ञ पूर्ण होने के बाद मारु देश के हरिभक्त एक-दो महीने रुके रहे । किसी का मन अपने देश जाने को नही हो रहा था । श्रीहरिने सभी को अपने वतन में जाने की आज्ञा भी कर दी फिर भी मारु देश के भक्तोने महाराज से कहा कि आप हमारे देश में संतो को सत्संग के लिये भेंजे तो ही हम जायेंगे । महाराज ने कहा कि आप सभी को जो सन्त अच्छे लगते हों उन्हें लेजाइये । सूखा प्रदेश होने से तथा अति दूर होने से भी संतो से पूछे जाने पर कोई उत्तर नहीं दिया । तब श्रीजी महाराज नाराज होकर गुरुचरणानंद स्वामी को आज्ञा किये और वे भक्तों के साथ महीनों तक चलकर भीनमाल के पास दांतिया गाँव में पहुंचे ।

अगल बगल के गाँवो में एक वर्ष तक रहकर स्वामीने वहाँ के भक्तों को पंचवर्तमान धारण करवाया । स्वामी की कृपा से भक्तों को महाराज कीमूर्ति ध्यान में प्रत्यक्ष दिखाई देने लगी । इससे सत्संग में खूब वृद्धि हुई । स्वामी कडक भी थे इसलिये भी सभी को कंठी धारण करा देते थे । जो भी सामने मिलता उसे रोक करके कंठी

धारण कराकर नियम देकर महाराजकी भजन करने की वात करते थे । स्वामी के आने के बाद पांच दशक बीत जाने पर भीनमाल के पास चेनपुरा गाँव में एक अक्षरधाम के मुक्त जामाजी चौधरी हुये । जो निर्दोषानंद स्वामी की परंपरा में आचार्य पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज से महादीक्षा लिये थे जिनका नाम स.गु. भक्तिनन्ददासजी था । स्वामी अखंड नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे जिससे कुलदेव हनुमानजी उनके वचन का अनुसरण करते थे । स्वामी हरिभक्तों के कष्ट निवारण के लिये तथा सत्संग की रक्षा के लिये जहाँ सत्संग होता वहाँ के गाँवों में कष्ट भंजन हनमानजी की प्रतिष्ठा करवाते थे । मूर्ति के रुप में हनुमानजी स्वामी के साथ प्रत्यक्ष बात करते थे । मारवाड तथा गुजरात के गाँवो में सत्संग करवाते । अमदावाद में श्री नरनारायणदेव की गादी के ऊपर प.पू. वासुदेवजीप्रसादजी महाराज छोटी उम्र के थे इसलिये कुछ वर्षोंतक अमदावाद में रहकर बहुत सारे उपद्रवों को शांत किये थे । स्वामी कुछ वर्षो तक अमदावाद के महंत भी थे । स्वामीने वाली, दांतिया, गोलिया, बीलिया, ऊझां, डांगरवा, कोठो, तेजवरा, माणसा इत्यादि गाँवों में कष्ट भंजन हनुमानजी की प्रतिष्ठा करवाये थे । जो आज भी भक्तिनंद स्वामी की शपथ कराकर संकल्प किया जाय तो तत्काल सिद्धि प्राप्ति होती है । किसी गाँव में अघटित घटना हो तो स्वामी हनुमानजी को उलहना देते थे । ऐसी महाराज के उपासना का बल था । भक्तिनंद स्वामी से मारुदेश का सत्संग खूब विकसित हुआ था ।

भिनमाल विस्तार के करीब ७० गाँव में सत्संग में वृद्धि हुई थी । स्वामीने १५ जितने मंदिर बनवाये थे । नंद पंक्ति के संतो जैती प्रतिभा वाले स्वामी थे । अक्षरधाम में जाने से ४ दिन पूर्व सभी को जानकारी देदिये थे । इसलिये भक्त उनका दर्शन करने आये । प्रातः स्वामी दतुअन कर रहे थे उस समय एक हरिभक्तने कहा कि स्वामी कुछ स्मरणिका आप दीजिये । यह सुनते ही स्वामी जो दातून कर रहे थे उसमें से चीरकर आधी को मंदिर के चौक में गाड दिये और कहे कि यह हमारी याद देती रहेगी । यदि कोई बालक बिमार हो जाये तो उस वृक्ष की पत्ती को पीसकर पिलाने से या टहनी तोडकर बांधने से रोग से मुक्ति मिल जाती है । ऐसी वहाँ पर मान्यता है । इसके बाद कणखोल गाँव में कृष्णस्वरुपदासजी स्वामी भी बड़े समर्थ संत थे । उन्होंने वाली में तीन शिखर का मंदिर बनवाया था । जिस में प.पू.ध.धु. वासुदेवप्रसादजी महाराजने राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की प्राण प्रतिष्ठा सं. १९९५ में की थी ।

आज वही मंदिर देदीप्यमान विराजमान है । इस मंदिर से ५० कि.मी. तक करीब २१ हरि मंदिर भी हैं । यहाँ पर सत्संग पूर्ण रुप से सुरक्षित है । बहुत सारे हरिभक्त इस संप्रदाय के इतिहास से अपरिचित होनेकेकारण दर्शनसे वंचित रहजाते हैं । मारवाडी संतो का मंडल वाली में सेवा करता है । जब जब उत्सव होता है तब तब बडी संख्या में मारवाडी भक्त वहाँ उपस्थित होते हैं । जीवन में सादगी भरा जीवन होतो उत्तम रहता है । उत्सव के अवसर पर गुजराती कीर्तन मारवाडी ताल में गाया जाता है, जिसे सुनकर बड़ा आनंद होता है । आज भी पूरी रात कीर्तन गाते हुये रात्रि जागरण होता है । किसी के भी घर पर उत्सव हो तो रात्रि जागरण में कीर्तन गाया जाता है । गुजरात के सभी संत-हरिभक्तों की अपेक्षा वाली में हरिभक्त अधिक संख्या में कीर्तन गाते मिलते हैं । ५०० से १००० जितने कीर्तन कंठ करके गाने वाले गाँवो में मिलते हैं । एक जेलातरा गाँव के हरिभक्त मेराजी हेमाजी चौधरी को तीन हजार कीर्तन कंठस्थ है । चार दिन तक लगातार कीर्तन गाते रहें तो भी कम नहीं होगा । एक बार गाया हुआ कीर्तन पुनः दूसरी बार नहीं आयेगा । नंद संतो में जो अष्ट कवि हुये है उनके विना उनकी रचना कोई बोल नहीं सकता । वाली के समरताजी चौधरी के दो हजार कीर्तन कंठस्थ है । ऐसे भोले भाले पवित्र हरिभक्तों का एकबार गुजराती लोग दर्शन करें तो गर्व उतर जायेगा ।

स.गु. निष्कुलानंद स्वामीने भक्त चिंतामणी प्रकरण १२० में लिखा है कि मारु देश के बड़े भक्त तथा जिनका मन बड़ा है, अंग कुसंग ने ओडखी । वडी थया हरि ना जन ।

स्वामीने २४ चौपाईयों में वाली प्रदेश (मारु देश) अर्थात् मारवाड के हरिभक्तों का गाँव तथा नाम का उल्लेख किया है । वाली जाने के लिये महेसाणा, पालनपुर, डीसा, धानेरा, सांचोर होकर जाया जा सकता है । इसके बाद विशेष जानकारी के साथ लिखा जायेगा ।

प्रसादीना पत्रोनुं आयमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र :

॥ श्रीः ॥

स्वस्ति श्री अमदावाद महाशुभ स्थाने शुभोपमायोग्य साधु शिरोमणी साधु ब्रह्मानंद स्वामी एतान श्री वरतालथी लि. साधु गोपालानंद स्वामिना जयश्री स्वामिनारायण वांचजो । परंच लखवा करण एम छे जे श्रीजी महाराजे लखावीने एम प्रबंधकर्यो छे जे देवने अर्थे मानता करे, भेंट मुके के थाल करावे, घोडुं, बडद, गाय, भेंस आदिक जे जे जंगम वस्तु अर्पण करे ते जे देव ने अर्थे करे ते देवनुं छे । माटे सुरतना सत्संगी अमदावाद आव्या हशे तेमने नरनारायणदेवने अर्थे पोतपोतानी श्रद्धा प्रमाणे कंइक कर्युं हशे तेनुं नामु अमने अक्षरानंद स्वामी ए देखाड्या त्यारे एम कह्युं जे ए देवने अर्थे वापर्युं छे ते छो वापर्युं एमां तमारे कांई बोलवुं नहि ते सारु तमारे पण एम जाणवुं । पण लक्ष्मीनारायणनी मानतानुं अथवा थालनुं जे जे होय ते ते मांगवुं नही अे; जे आ रीत्यने मागशे ते नरनारायणनुं मागीने लक्ष्मीनारायणदवेने अर्थे करावशे तथा लक्ष्मीनारायणदेवनुं मागीने नरनारायणदेवने अर्थे करावशे तेने देव नो द्रोह थाशे तेणे करीने तेनुं आलोक परलोकमां अवलुं जरुंर थाशे । केम जे ए देव छे ते महाराज पोते पुरुषोत्तमनारायणे बेसाड्या छे ते तेनुं दैवत ए देवमां छे । माटे ए देवनुं ज धार्युं थाशे पण बीजा कोईनुं धार्युं नहि थाय । एम सिद्धांत छे तत्र श्लोकः न तस्य वा कश्चित् तपसा विद्ययावा नयोरावीर्येणनीयथावा । नैवार्थधर्मे परतः स्वतो वा कृतं विहंतुं तनु महिमृयात् ॥ सतेषु किं बहुना ।

संवत १८८७ ना कारकत वदी-९ लेखन शुकमुनिना साष्टांग प्रणाम सेवा में अंगीकार करजो ।

साधु शिरोमणी साधु ब्रह्मानंद स्वामीने पत्र पोंचे ।

विवरण : भगवान श्री स्वामिनारायण अक्षरधाम से इस ब्रह्माडं में पधारे और जीवों का आत्यंतिक कल्याण रुपी मोक्ष अनंतकाल तक चालू रहे इस हेतु से मंदिरों में अपने स्वरुपों को प्रतिष्ठापित किये । अपने बाद गुरुपद पर धर्मवंशी आचार्यों की स्थापनी की और शुद्ध उपासना के लिये सत्शास्त्रों का निर्माण करवाया । स्वयं जीवों के कल्याणार्थ तीन गूढ संकल्प पूर्ण करके स्वधाम गमन किया । श्रीहरिने स्वयं श्रमयज्ञ करके अपने माथे पर पत्थर रख रखकर संत-हरभक्त के सहयोग से मंदिर निर्माण करवाया, जिससे तीर्थवासी निरंतर इन मंदिरों में दर्शनार्थ आते रहते है, ज्ञान वार्ता - संत सत्संग इत्यादि का लाभ लेते रहते हैं । श्रद्धालु - नर नारियों की सदा भीड लगी रहती है । प्रातःकाल संतो के सुमधुर कंठ से प्रातः कालीन गीतों से वातावरण रम्य हो जाता हैं । इसी तरह सायंकाल की धुन से तथा गीतों से महाप्रभुजी योगनिद्रा में हो जाते हैं । इस तरह का वातावरण मंदिरों में सदा बना रहता है ।

इन सभी मंदिरो का शुद्ध-पवित्र व्यवस्थापन हो सके इसलिये श्रीहरिने संप्रदाय के दो देश विभाग करके उस पर धर्मवंशी आचार्य पद की स्थापना अपने कुल में से किये । स्वामिनारायण संप्रदाय की यह विशेषता है कि गृहस्थाश्रम में आचार्य पद होने से संतो के धर्म-नियम पूर्वक होते हैं

जिससे धन-स्त्री के योग से दूर रहना संभव हो जाता है। संतो का त्यागाश्रम होने से उन्हें पुनः व्यवस्थाका भार सौंपना ठीक नहीं यह समझकर श्रीहरिने गृहस्थाश्रमी धर्मवंशी आचार्य को यह भार समर्पित किये और देव सेवा का भार संत-ब्रह्मचारियों को दिये। यहाँ विशेष लिखना यह है कि धर्मवंशी आचार्यश्री संप्रदाय के गुरुपद पर होने से उन्हें ही मंत्रदीक्षा देने का अधिकार दिया गया। इसके बाद ही मुमुक्षु सन्यस्त के मार्ग पर चल सकते हैं। इस तरह श्रीहरि के वचन के अनुसार मंत्रदीक्षा प्राप्त किये हुये संत वचन सिद्ध कहलाते हैं।

श्रीहरिने जब मंदिरों का निर्माण किया उस समय महाराज की शरणागति स्वीकार किये हुये अनेक राजा अपने तन-मन-धन जमीन-मकान इत्यादि को श्रीजी महाराज के चरणों में श्री कृष्णार्पण कर दिये थे। लेकिन उनमें से किसीने मंदिरों पर किसी प्रकार की मालिकी का हक नही रखा। इन में से किसी को ट्रस्टी या खजानची इत्यादि स्थान प्राप्त करने की मानसिकता नहीं थी। उस समय के राजा महाराजाओं ने भी मंदिरों को खूब मदद की थी लेकिन आवक-जावक का कभी हिसाब नही मांगा। यह सब श्रीजी महाराजकी आज्ञानुसार धर्मवंशी आचार्य संत तथा हरिभक्त एक सूत्रात्मभाव से व्यवस्थाको चलाते थे। आज के विषम समय में सरकार की दखलगिरी बढ गई है। जिन्हें सत्संग के साथ कुछ लेना देना नहीं है फिर भी वे मंदिर की आवक पर नजर करके बैठे है, ऐसी स्थिति में हरिभक्तों का यह कर्तव्य है कि मंदिर की किसी व्यवस्था में विना दखल दिये मात्र मंदिर में बिराजमान अपने इष्टदेव की तरफ दृष्टि रखनी चाहिये। श्रीहरिके वचन में दृढ विश्वास रखकर उन्हीं के वचन के अनुसार वर्तन करना चाहिये।

इस व्यवस्थापन के लिये श्रीहरिने अपने समय में देश विभाग का लेख लिखवाकर संप्रदाय की व्यवस्था को प्रमाणित किया था। जिस में धर्मवंशी आचार्य, संत-हरिभक्त किस तरह का वर्तन करें वह निर्दिष्ट है। ऐसा न करने से क्या हानि होती है। उसका भी निर्देश किया है। स्वामिनारायण भगवान के आश्रित सत्संगी मात्र इस देश विभाग के लेखका वांचन अवश्य करें। इस लेख के अनुसार वर्तन करें। आज्ञानुसार कोई भी सत्संगी हरिभक्त दोनो देश विभाग के अनुसार देव को जंगम वस्तु अर्पण किया हो वह वस्तु उस देव की कही जायेगी। दोनो देशों में प्रतिष्ठित देवों के प्रति आस्था-श्रद्धा के अनुसार हरिभक्त देवों के मान्यता के अनुसार जो भी भेंट दे उसी देव को ही अर्पित करनी चाहिए न कि अन्य देव को जो भी जंगम मिलकत-धन-धान्य-पशु इत्यादि जिस देव को अर्पण करने का संकल्प किया हो वह संपत्ति उन देवों की कही जायेगी - हेरफेर नहीं करना चाहिये।

आज के युग के अनुसार जंगम मिलकत भेंट देने के सन्दर्भ में पहले यह कि वह किस देश विभाग का रहने वाला है, किस देव को अर्पण कर रहा है यह विचार करके जिसे वह अर्पण करना चाहता है वह मिलकत उस देव की कही जायेगी।

स्थावर मिलकत भेंट देने के संदर्भ में वह मिलकत किसदेश की है और किस देव को अर्पण की जा रही है पर सब चिन्तनीय है। जैसे कोई हरिभक्त श्री नरनारायणदेव देश विभाग का हो यदि वह अपनी मिलकत श्री लक्ष्मीनारायण देव को अर्पण करना चाहता है तो प्रथम वह उतनी मिलकत की सम्पत्ति श्री नरनारायणदेव देश के आचार्यश्री को अर्पण करके ही श्री लक्ष्मीनारायण देव को अर्पण करे। इस लिये देश विभाग का लेख वांचने के बाद ही सभी हरिभक्त दान-भेंट को करें। जिस से देश के धर्मवंशी आचार्य को तथा व्यवस्था में सहयोग करने वालों को व्यवस्थापन में सरलता रहे।

इस आज्ञापत्र में पुनः पत्र का स्मरम दिलाकर स.गु. श्री गोपालानंद स्वामी को आज्ञापालन करने का निर्देश दिया गया है। श्रीजी के स्वधाम गमन के बाद मात्र पांच महीने के अन्तराल में संप्रदाय के बड़े संत, दोनो देश की

मध्यस्थी करने वाले ऐसे योगीराज ऐश्वर्यमूर्ति श्री गोपालानंद स्वामी लिखवा रहे है कि जो इस आज्ञा का उल्लंघन करेगा वह देव द्रोही कहा जायेगा । श्रीजी द्वारा स्थापित जितने भी देव है (स्वरुप हैं) उनकी स्थापना स्वयं श्रीहरिने की है इस लिये इसका सदा ख्याल रखना चाहिये कि हम उन मूर्तियों की अवगणना तो नहीं कर रहे है यदि ऐसा होता है तो निश्चित द्रोह कहा जायेगा । शब्दों के ऊपर खूब भार देना चाहिये, शब्दों को गहराई से चिन्तन करना चाहिये । ऐसा न करने पर अर्थघटन नही होगा जिससे यह लोक तथा परलोक दोनो बिगड जायेगा ।

देश विभाग के लेख की आज्ञाओं से अलग होकर जो वर्तन करे उनकी क्या हालत होगी वह वही जाने । जिनके द्वारा स्थापित हनुमानजी आज भी प्रत्यक्ष दर्शन देते हैं । ऐसे उन महापुरुष के ए शब्द है, वे सभी को जागरुक करने के लिये इस तरह का पत्र लिखवाते हैं । इसके अलांवा और भी लिखवाते है कि श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव को महाराज पुरुषोत्तम नारायण स्वयं प्रतिष्ठित किया है । इसलिये उन देवों में पूर्ण देवत्व समाया हुआ है । न्यूनाधिक्य की वात ही नहीं है । श्रीहरि सर्व अवतार के अतारी हैं । अनंत कोटि ब्रह्मांड के नायक हैं । काल-मायादिक शक्तियों के नियंता है । कर्म फलप्रदाता हैं । कारण के कारण हैं । इस तरह पूर्ण सामर्थ्यवान की तरफ देखने के बाद यह समझ में आयेगा कि उनसे प्रतिष्ठित जो स्वरुप हैं वे कितने प्रभावी होंगे । स्वामीजी लिखवाते हैं कि ऐसे पुरुषोत्तमनारायण का दैवत उनदेवों में सदा विद्यमान रहता है । इसलिये आज भी उनदेवों के चौखट पर मस्तक टेकने से, प्रार्थना करने से, श्रद्धापूर्वक कुछ मांगने से कोई वस्तु अलभ्य नहीं रहती । प्राय: सभी भक्त निराशाभाव से जाते हैं और आशा की किरण खिलने पर वापस जाते हैं । इसलोक में संपत्ति तथा परलोक में आत्यंतिक कल्याण प्रदान करने के लिये ही स्वयं श्रीहरिने इन देवताओं की स्थापना की है । प्रभु ने जब प्रतिष्ठा कीथी तभी वचन दिया था कि इन मूर्तियों में रहकर हम सभी की मनोकामना पूर्ण करेंगे । समझदार विवेकी हरिभक्त को ऐसी प्रतापी मूर्तियों को छोड़कर अन्यत्र भटकना नहीं चाहिये । अपनी श्रद्धा को दूसरे देवों के चरण में अर्पित नहीं करना चाहिये । स्वामी लिखवाते हैं कि आपका चाहा कुछ नहीं होगा, प्रभु का चाहा सब कुछ होगा । इसलिये हमें एक हरिभक्त के रुप में शरणागति स्वीकार करके उन्हीं से मांगना चाहिये । कदाचित अपना कर्म कठिन होने से आपकी इच्छा पूर्ण होने में विलम्ब हो सकता है लेकिन अपनी श्रद्धा भक्ति को अपने इष्टदेव में होनी चाहिये । महाराजकी आज्ञा में रहकर समर्पित भाव से अपने इष्टदेव की शरणागति स्वीकार करने में जो हित है वह अन्यत्र भटकने में नहीं है । यह पत्र का हार्द है । यह अनुभव का विषय है । अन्त में सवामी लिखवाते हैं कि सिद्धांत का कभी त्याग नहीं करना चाहिये । जो सम्पूर्ण सत्य है उसमें समाधान का कोई अवसर नहीं । श्रीहरि की महिमा का ख्याल करके उनके द्वारा स्थापित देवों का माहात्म्य समझ लेना चाहिये । इसी तरह श्रीहरि द्वारा प्रतिष्ठित धर्मकुल आचार्य का महत्व समझना चाहिये । स्वामी द्वारा लिखायेगये इस पत्र से दोनो देश के विभाग लेख को अवस्य चिन्तन पूर्वक पढकर वैसा ही जीवन में उतारना चाहिये ।

पत्र में हस्ताक्षर स.गु. श्री शुकानंद मुनि के हैं । लिखवाने वाले योगीराज श्री गोपालानंद स्वामी है तथा अमदावाद देश के सब से बडे संत शिरोमणी स.गु. श्री ब्रह्मानंद स्वामी के लिये यह पत्र लिखवाया गया है । ए तीनो सद्गुरु संप्रदाय के आभूषण थे । वचन सिद्ध थे । श्रीहरि के वचनामृत को ग्रंथस्थ करने में साथ थे । ऐसी महिमा समझकर इस पत्र को श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ९ में रखा गया है । इस पत्र का सभी लोग अवश्य दर्शन करें तथा श्रीजी महाराज की आज्ञारुप इस पत्र का वांचन करके जीवन में उतारकर प्रसन्न रहें ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

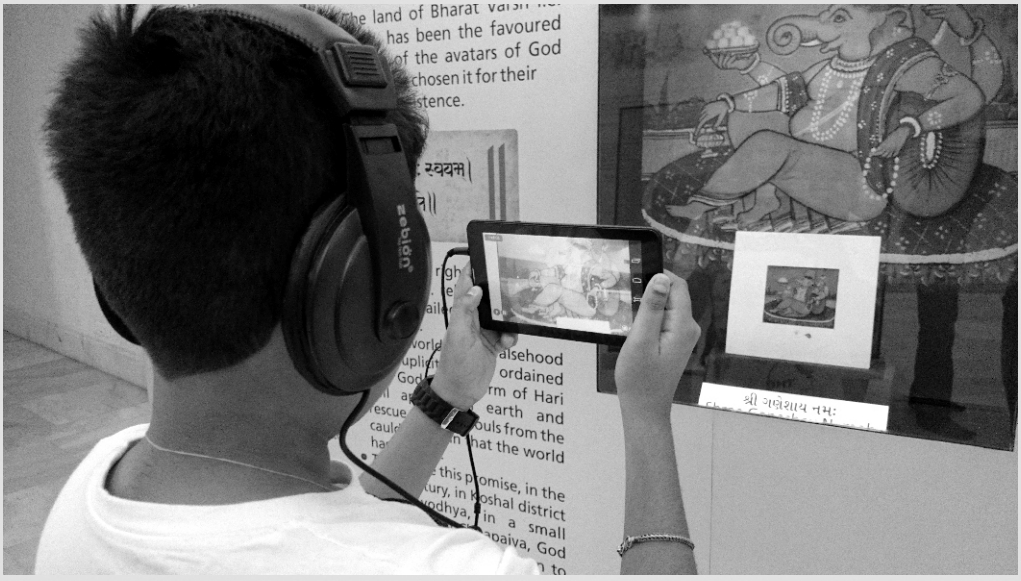

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ओडियो गाइडपोट

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दीपावली के अवसर पर बहुत सारे हरिभक्त तथा अन्य लोग दर्शनार्थ आते रहे। सभी की एक ही आवाज थी ''न भूतो न भविष्यति'' परंतु प.पू. बड़े महाराजश्री का पहले से आग्रह था कि म्युजिय में आनेवाले दर्शनार्थी को किसी प्रकार की तकलीफ न पडे इसके अलांवा अधिक से अधिक सुविधा उपलब्धहो सके। उस वचन को शिरमौर्य रखकर म्युजियम में आनेवाले प्रत्येकजन का ध्यान रखा जाता है। म्युजियम में प्रदर्शित की जाने वाले प्रसादी की वस्तुओं का दिग्दर्शन कराने वाली एक ओडियो डीवाइज बनाकर दर्शनार्थियों के लिये उपलब्धकराया गया है। यह डिवाइजन अर्थात् टेबलेट में एक एप्स बनाकर इन्स्टोल किया गया है। इससे दर्शनार्थियों को मात्र टोकन फीस देकर उसे लेकर प्रसादीकी वस्तु सामने रखे तब उसमें रखे गये कैमरे द्वारा वह वस्तु उसके टेबलट की स्क्रीन पर दिखाई देने लगेगा और उस टेबलट के साथ हेडफोन में गुजराती अथवा अंग्रेजी (जो प्रारंभ में ओप्सन के रुप में सिलेक्ट किया गया हो) इस वस्तुकी जानकारी सुमधुर आवाज में सुनी जा सकती है। इससे उस वस्तु का महत्व तथा श्रीजी महाराजने किस स्थल पर किस वस्तु का प्रयोग किया था, इसकी जानकारी

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।
मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**
नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

मिलेगी । दुनिया भर की म्युजियम में इस प्रकार की व्यवस्था प्रथमवार अपने म्युजियम में उपलब्धकराई गयी है। यह हम सभी के लिये गौरव की बात है। भविष्य में इस टेबलेट के माध्यम से ओडियों द्वारा उस समय के वे प्रसंग भी दिखाये जायेंगे । उदाहरण के रुप में - जीतबा का रथ टेबलट में दिखाई दे तो उस समय उस रथ पर विराजमान श्रीजी महाराज कैसे लगते होंगे ? रथ कैसे चलता रहा होगा ? इसका तद्रुप दर्शन होने लगेगा । इस तरह सभी वस्तुओं की समझ दर्शनार्थियों को दी जायेगी । यह डीवाइज (ओडियो गाइटपोट) लेने के लिये आपको अपना ओरिजीनल आई.डी. प्रूफ म्युजियम में जमा कराना होगा । जब आप दर्शन करके वापस आयेंगे तब आप उस डीवाइज को वापस करके अपना आई.डी. प्रफू प्राप्त कर सकते हैं। कारण यह कि यह डीवाइज तथा उसके बनाने की प्रक्रिया खर्चीली होते हुये भी भीस सभी के अनुकूल हो इसका ध्यान रखा गया है। तो अब आप जब म्युजियम में दर्शनार्थ आवे तब साधन का अवश्य उपयोग कीजीयेगा, जिससे प.पू. बड़े महाराजश्री का संकल्प फली भूत हो - जयश्री स्वामिनारायण

- प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि अक्टूबर-२०१४

रु.।३५,००१/-	जागृतिबहन व्योमेशभाई शाह - अमदावाद।	रु.।५,१००/-	ठक्कर प्रज्ञाबहन महेन्द्रभाई चि. तत्स निरवभाई ठक्कर चि. आरव के जन्म प्रसंग पर।
रु.।२५,०००/-	श्री स्वामिनारायण एकेडमी - अमदावाद	रु.।५,०११/-	पटेल मणीलाल सोमदास, वडु।
रु.।२१,१११/-	पटेल मगनभाई धरमदास परिवार डांगरवा।	रु.।५,०००/-	धर्मकुल की निष्ठावान बहन, महेसाणा।
रु.।१०,०००/-	जोशी कौशिकभाई (घनश्याम इर्न्जिनीयर्स) अमदावाद	रु.।५,०००/-	कमलेशभाई एच. शाह, अमदावाद।
रु.।५,६००/-	हरिकृष्ण कास्टनर्स दरियापुर, अमदावाद	रु.।५,०००/-	अ.नि. मोहनभाई करशनभाई, सापावाडा
		रु.।५,०००/-	धर्मप्रसाद मणीलाल शुकल, अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (अक्टूबर-२०१४)

ता. ८-१०-१४	श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज हर्षद कोलोनी, बापूनगर
ता. २२-१०-१४	होल नं. १ में प्रतिष्ठित प्रसादी के हनुमानजी का समूह पूजन।
ता. २३-१०-१४	चन्द्रिकाबहन महेन्द्रभाई शुकल, नारणपुरा
ता. २६-१०-१४	पटेल अतुलकुमार बेचरदास (लालोडावाला), वडोदरा
ता. २८-१०-१४	धवलभाई महेन्द्रभाई भावसार (सिडनी-ओस्ट्रेलीया)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा । महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए ।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

પ.પૂ. ધ.ધૂ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮ કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞા તથા આશીર્વાદથી
વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર-કાલુપુરમાં બિરાજતા
શ્રી નરનારાયણદેવના જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા સુવર્ણ સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટન પ્રસંગે

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪ થી ૨૮ ડિસેમ્બર-૨૦૧૪

મહોત્સવ સ્થળ

શ્રી નરનારાયણ નગર, તપોવન સર્કલ, મોટેરા ગામ, એસ.પી. રીંગ રોડ, અમદાવાદ.

અધ્યક્ષશ્રી : પ.પૂ. ભાવિ આચાર્યશ્રી ૧૦૮ શ્રી વજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

આયોજક

મહંત સ્વામી સ.ગુ. શા. સ્વામી શ્રી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા સ્કીમ કમિટી
તથા શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ સમિતિ
શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર કાલુપુર - અમદાવાદ-૧
ફોન. ૦૭૯-૨૨૧૩૨૧૭૦, ૨૨૧૩૬૮૧૮

શ્રી નરનારાયણદેવ મહોત્સવ

તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪

સર્વાવતારી ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણ અનંત જીવોનું કલ્યાણ કરવા અનંતમુક્તોને સાથે લઈ મનુષ્યદેવ ધારણ કરી પૃથ્વીલોક પર પધાર્યા. ૪૯ વર્ષ સુધી પોતાની અપાર દયા અને દિવ્ય ઐશ્વર્ય વડે અનંતજીવોને અક્ષરધામના સુખભોગી બનાવ્યા અને એ પરંપરા અવિરત ચાલ્યા કરે એ માટે દેવ, આચાર્ય, સંત અને સત્‌શાસ્ત્રની કલ્યાણકારી પરંપરા પ્રવર્તાવી. શ્રીહરિએ કરેલા અનેક અલૌકિક કાર્યો પૈકીનું શિરમોર કાર્ય એટલે મંદિરોનું નિર્માણ. ભગવાન શ્રી સ્વામિનારાયણની આજ્ઞાથી આજથી લગભગ ૧૯૨ વર્ષ પહેલા સ.ગુ. આનંદાનંદ સ્વામીએ ગુજરાતના મુખ્ય નગર અમદાવાદમાં વિશ્વનું સૌ પ્રથમ શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિરનું નિર્માણ કર્યું અને સર્વોપરી શ્રીહરિએ સ્વહસ્તે બાથમાં લઈને સ્વસ્વરૂપ શ્રી નરનારાયદેવ પધરાવ્યા. શ્રી નરનારાયણદેવના ઉંબરા પર ઊભા રહીને ''આ નરનારાયણ દેવનું સ્વરૂપ અને અમારા સ્વરૂપમાં લેશમાત્ર ફેર નથી.'' ''જે એમ જાણે જે આ નરનારાયણદેવ અને ભગવાન સ્વામિનારાયણ જુદા છે તેણે અમને ઓળખ્યા જ નથી.'' ''આ નરનારાયદેવની મૂર્તિ સત્સંગી માત્ર એ પૂજામાં રાખવી.'' આવા મહિમા વચનો સ્વમુખે કહ્યાં એવા મહાપ્રતાપી શ્રી નરનારાયણદેવનું મંદિર સમયના ઘસારે ઘસાતા જીર્ણોદ્ધારની જરૂરિયાત ઉભી થઈ. જે તે સમયે પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી તે સમયના મહંત સ.ગુ. પી.પી. સ્વામી (જેતલપુર)એ કાર્યનો આરંભ કર્યો. ત્યારબાદ પૂ. નિર્ગુણ સ્વામી તથા પૂ.નારાયણસ્વરૂપ સ્વામીએ કાર્યને આગળ ધપાવ્યું. પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી વર્તમાન મહંત સ.ગુ. શાસ્ત્રી સ્વામી હરિકૃષ્ણદાસજી તથા અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવ સ્કીમ કમિટિએ આ જીર્ણોદ્ધારના કાર્યને પુરજોશમાં વેગ આપ્યો જે હવે પૂર્ણતાને આરે છે. સાથો સાથ દેવોના સુવર્ણ સિંહાસન પર જીર્ણ થતા તે સ્થાને નૂતન સુવર્ણ સિંહાસન બનાવવાનો નિર્ધાર કર્યો જે પણ પૂર્ણ થશે. જીર્ણોદ્ધારિત મંદિર તથા નૂતન સિંહાસનના ઉદ્‌ઘાટનના પાવન પ્રસંગે પ.પૂ. ધ.ધુ. આચાર્ય મહારાજશ્રીની અધ્યક્ષતામાં સૌ સંતો ભક્તોના સાથ સહકારથી ભવ્યાતિભવ્ય ''શ્રી નરનારાયદેવ મહોત્સવ'' તા. ૨૪-૧૨-૨૦૧૪ થી તા. ૨૮-૧૨-૨૦૧૪ પર્યંત ધામધૂમથી ઉજવવાનું નિર્ધારેલ છે. તો આવો આપણે સૌ સાથે મળી આપણું તન, મન અને ધન શ્રી નરનારાયણદેવના ચરણોમાં સમર્પિત કરી આ ઉત્સવને ઉમંગથી ઉજવીએ.

छपैयाधाम में प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में प्रथम युवा सत्संग शिबिर

अमदावाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के आशीर्वाद से एवं प.पू. लालजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में छपैयाधाम में सत्संग शिबिर का आयोजन ता. २८-१०-१४ से ५-११-१४ तक किया गया था । इस में श्री नरनारायणदेव देश गादी के ७८ गाँव के १५ से २५ वर्ष की अवस्था वाले ७०० युवानो ने लाभ लिया था ।

पंच दिनात्मक इस युवाशिबिर में श्री नरनारायणदेव की महिमा, आध्यात्मिकता से सम्प्रक्त प्रश्नोतरी, छपैयाधाम की महिमा, सत्संग महिमा, अनुशासन का ज्ञान इत्यादि विषयो पर ज्ञान की प्राप्ति के लिये आयोजन किया गया था । इस में शा. निर्गुणदासजी कालुपुर, स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी, को. स्वामी नारायणमुनिदासजी, ब्र. स्वा. हरिस्वरुपानंदजी, शा. स्वा. भक्तिन्दनदासजी, शा. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी, स्वा. माधवप्रियदाजी, उदयनभाई महाराजा इत्यादि संत-भक्तोंने शिबिरार्थियों को ज्ञान प्रदान किया था । शिबिर में ब्र. महंत वासुदेवानंदजी तथा अयोध्या के महंत देव स्वामीने प.पू. लालजी महाराजश्री की सुन्दर सेवा करके प्रसन्नता प्राप्त की थी रात्रीय सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किये गये थे ।

शिबिर के समापन प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

सभा की पूर्णाहुति के बाद नंद संतो के रचित कीर्तन गाये गये थे । शिबिरार्थियों को भोजन कराकर अमदावाद के लिये प्रस्थान किया गया था । यह शिबिर पांचदिन तक चला । इस में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी तथा पू. श्रीराजा भी उपस्थित होकर शिबिरार्थीयों को आशीर्वाद देकर उत्साह वर्धन की थी ।

देवो की आरती

दिप प्रागटय

सर्वोपरी छपैयाधाम में
प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्षता में
प्रथम युवा सत्संग शिबिर

नारायण सरोवर की नित्य आरती

गौघाट

मखोडाघाट

भोजन प्रसाद

पू.श्रीराजा

सांस्कृतिक कार्यक्रम (नाटक)

संतो के साथ प्रश्नोत्तरी

आध्यात्म का संचार आवश्यक : लालजी महाराज

समाचारपत्रोमां नोंध

छपिया परिक्रमा

नारायण सरोवर की समूह आरती

युवा सत्संग का शुभारंभ

समाचारपत्रोमां नोंध

अयोध्या दर्शन

देश विदेशके मंदिरोमे दिवाली अन्नकूट दर्शन

गांधीनगर सेक्टर-२

छपैया

नारणघाट

वडनगर

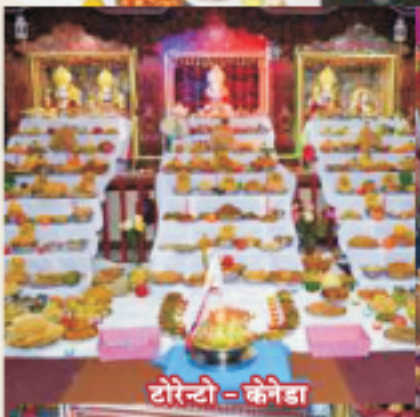
टोरेन्टो - केनेडा

क्लीवलेन्ड

वोशिंगटन डी.सी.

कोलोनिया

साबरमती - रामनगर

लेस्टर (यु.के.)

डीट्रोईट (महापूजा)

मुबारकपुरा

सानहोजे

कांकरिया

મહોત્સવ દરમિયાનના આયોજનો

- શ્રીમદ્ સત્સંગીભૂષણ અંતર્ગત શ્રી નરનારાયણદેવ માહાત્મ્ય કથા
- એક દિવસીય શ્રી હરિયાગ (યજ્ઞ)
- 3 દિવસ સમૂહ મહાપૂજા
- મહાઅભિષેક, છપ્પન ભોગ અન્નકૂટ
- શ્રી નરનારાયણદેવની નગર યાત્રા
- પ્રદર્શન
- શ્રી સ્વામિનારાયણ મહામંત્ર અખંડ ધુન
- બ્લડ ડોનેશન કેમ્પ
- સર્વ રોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ દિવાઓ વડે કાલુપુર મંદિરની સમુહ આરતી
- શ્રી નરનારાયણદેવ બાલમંડળ તથા બાલિકામંડળ દ્વારા સાંસ્કૃતિક કાર્યક્રમ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં ધાર્મિક આયોજનો

- ૨૫૧ ગામડે સત્સંગ સભાઓ
- ૧૫૧ મીનીટની ૨૫૧ ગામડે અખંડધૂન
- ૫૧ કરોડ "શ્રી સ્વામિનારાયણ" મહામંત્ર લેખન
- જનમંગલ - ૧,૨૫,૦૦,૦૦૦, વચનામૃત - ૫૧૦૦, ભક્તચિંતામણી - ૫૧૦૦ પાઠ
- પદયાત્રા દ્વારા કાલુપુર શ્રી નરનારાયણદેવ દર્શન
- ૧૧૦૦૦ શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન સભ્યપદ ઝુંબેશ

મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં સામાજીક આયોજનો

- ૧,૨૫,૦૦૦ વૃક્ષારોપણ
- ૨૧૦૦ બોટલ બ્લડ ડોનેશન તથા સર્વરોગ નિદાન કેમ્પ
- ૧૧૦૦૦ શૈક્ષણિક સાધનોનું વિતરણ
  (ગામડાઓના બાળમંડળના વિદ્યાર્થીઓને)
- વ્યસન મુક્તિ અભિયાન
- ૧૫૧ અપંગોને ટ્રાઈસિકલ વિતરણ

આપનો સહયોગ

આ મહોત્સવના ઉપલક્ષમાં આપ આપના પરિવારજનો, મિત્રો સાથે મળી માળા, દંડવત્, પ્રદક્ષિણા, જનમંગલ-વચનામૃત-ભક્તચિંતામણીના પાઠ, મહામંત્રલેખન, પદયાત્રા જેવા નિયમો લઈ અથવા લેવડાવી વિશેષ ભજન કરશો. (જે માટે નોટબુક તથા ફોર્મ આપણા શ્રી સ્વામિનારાયણ મેગેઝીન અથવા તો કાલુપુર મંદિરની ઓફિસમાંથી મળશે.)

આર્થિક રીતે યોગદાન આપી સહભાગી થવા ઇચ્છતા ભક્તો મહોત્સવ દરમિયાન આયોજીત સમુહ મહાપુજા-હરિયાગ તથા અન્ય યજમાન પદનો લાભ લઈ શકશે.

૧૧,૦૦૦/- ૨૧,૦૦૦/-	તા. ૨૫-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ સમૂહ મહાપૂજાનો લાભ મળશે. (પ.પૂ. લાલજીમહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૩૧,૦૦૦/- ૫૧,૦૦૦/-	તા. ૨૬-૧૨-૨૦૧૪ના રોજ પ.પૂ. આચાર્ય મહારાજશ્રીના નિવાસસ્થાને નિત્ય ધર્મકુળ દ્વારા પૂજાતા પ્રસાદીના હરિકૃષ્ણ મહારાજની મહાપૂજા(પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૧,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ સર્વાવતારી ભગવાન શ્રીહરિની પૂજામાં રહેલાં અને પૂજ્ય આચાર્ય મહારાજશ્રી જેની દરરોજ પૂજા કરે છે એવા પ્રસાદીના શાલિગ્રામ ભગવાનની મહાપૂજા (પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં)
૨,૦૦૦૦૦/- કે તેથી વધુ	તા. ૨૭-૧૨-૨૦૧૪ એકદિવસીય શ્રીહરિયાગ (યજ્ઞ)ના પાટલે બેસવાનો લાભ.

આથી વિશેષ સેવા કરીને વિશિષ્ટ યજમાન પદનો લાભ લેવા ઇચ્છતા ભક્તજનોએ કાલુપુર મહંત સ્વામી અથવા આગેવાન સંતોનો સંપર્ક કરવો.

Harikrushna Graphics • 982-5850-559, 987-9961-789

: महामहोत्सव का स्थल
तपोवन सर्कल, मोटेरा गाँव, अहमदाबाद .

हरिभक्तों के वंशजो को सुख देते भगवान के वंशज

श्रीजी महाराजने अनंतजीवों को अपने धाम का सुख प्रदान करने के लिये अनेक उपाय किये हैं। अनेकों मंदिरका निर्माण किये, अनेकों प्रकार के उत्सव किये। सदाव्रत चलाये, ब्राह्मणो को भोजन कराकर तृप्त किये। श्रीस्वामिनारायण भगवान को ब्राह्मण बड़े प्रिय थे। श्रीजी महाराज अपनेहाथों से ब्राह्मणों को भोजन कराते और दक्षिणा भी देते थे। एक वार श्रीजी महाराज नांदोल गाँव में पधारे। स्वामिनारायण भगवानने वहाँ के ब्राह्मणोंके लिये ब्रह्मभोज कराने का संकल्प किया। वहाँ के अग्रगण्य ब्राह्मणोको बुलवाया ये सभी आये तो भगवानने उन सभी ब्राह्मणों को अपना संकल्प सुनाया। लेकिन उन सभी में परस्पर मत भेद था। इसलिये वे भगवान के वचनो को नहीं माने। जिससे ब्रह्मभोज में भाग नहीं लिये। उसी सयम श्रीजी महाराजने सलकी गाँव के हरिभक्तों को बुलाया और उन्हें यज्ञोपवीत धारण कराकर दीक्षा देकर ब्राह्मण बनाकर अपने हाथों से भोजन कराकर दक्षिणा प्रदान किये। भगवान के अलौकिक सुख का लाभ उसे ही मिल सकता है जो बडे भाग्यशाली होते हैं। सलकी गाँव में श्रीजी महाराज एक महीने तक रुके थे।

''कोईक गाममां जइने आवे, कोई गाममां रात रोकावे।
राख्यो उतारो सलकी गांमे एवुं सुकआप्युं सुखधामे॥

(श्री पू. चरित्र पुष्पमाला पुष्प-७)

वहाँ पर श्रीजी महाराज संत हरिभक्तों के साथ खारी नदी में स्नान करने जाते और ऋण मुक्तेश्वर महादेवका दर्शन करते। ऋण मुक्तेश्वर महादेव प्रसादी के हैं। वहाँ के हरिभक्त दयालजीभाई ठाकोर तथा आदरज के खांट - जहाँ जहाँ महाराज उत्सव करते वहाँ वहां सेवा में साथ रहते। उन सभी की प्रतिष्ठा अच्छी थी। इसीलिये वे लोग चौकीदारी की सेवा में खड़े पैर रहते थे। ऐसे दयालजीभाई ठाकोर के स्नेह के वश होकर श्रीजी महाराज वहाँ पर एक महीने तक रुके रहे। इस तरह सलकी गाँव भगवान के प्रसादी का है।

ऐसे दिव्य संतके गाँव में जहाँ पर श्रीजी महाराजने अपने हाथों से अपने हरिभक्तों को भोजन कराया था। उसी प्रसादी के स्थान में ता. २०-१०-१४ को प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपागादीवालाजी की आज्ञा से सलकी गाँव के सभी बालकों को भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा प.पू. श्रीराजा पधारकर अपने हांथो से सभी को भोजन कराया था। (कल्पना तो कीजिये कि जो सुख भगवान अपने भक्तों को देते थे वही सुख हरिभक्तों के वंशजों को भगवान के वंशज दे रहे हैं)। उसके बाद सभी बालकों को दीपावली के त्यौहार पर प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. श्रीराजने फटाकडा तथा चोकलेट अपने हाथों से दिया उस समय बालकों का हृदय गदगद हो गया था।रोमांचित होकर आनंदित हो उठे थे।

मनुष्य सदा अपने सुख का विचार पहले करता है लेकिन ये भगवान के पुत्र हैं। मनुष्य का स्वभाव कैसा होता है। तो दीपावली के अवसर पर अपने लिये फटाकडा तथा नये - नये वस्त्र मिठाई इत्यादि लाने का उमदा विचार करता है लेकिन दूसरे के लिये कभी विचार नहीं करता है। लेकिन यह भगवान का कुल धर्मकुल जो सदा सभी के सुख का विचार करता है। छोटे से छोटा हरिभक्त भी उनकी दृष्टि से दूर नहीं रहता। भले वह बहुत दूर के गांव में क्यों न रहता हो। आपलोग विचार कीजिये कि कितने लोग सलकी गाँव का नाम भी नहीं सुनें होंगे ऐसे गाँव में हरिभक्तों को तथा बालकों को भोजन कराने का शुभ संकल्प प.पू. गादीवालाजीने मन में हुआ तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवं पू. श्रीराजाने इस संकल्प को सार्थक किया।

सलकी गांव के हरिभक्तों का घर भले छोटा होगा लेकिन उनका हृदय बहुत विशाल है। जिस के पुण्य प्रताप से आज भगवान के आठवें वंशज इस प्रकार का दिव्य सुख दिये। धन्य हैं यह गांव तथा यहाँ के गाँव वासी धन्य है जिन्हे धर्मकुल का आश्रय मिला है।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सभी सुखकी मूल - शिक्षापत्री

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवानने जीव मात्र के सुख के लिये अनेकों प्रकार के कार्य किये जिसमें धरती के ऊपर मोक्ष का सदाव्रत चलता रहे तथा समाज कल्याण के उद्धार का कार्य सदा चलता रहे इस के लिये श्रीजी महाराजने श्री नरनारायणदेवादियों के स्वरुप को प्रतिष्ठित किया । धर्मवंशी आचार्यों की स्थापना की । विशाल संत समुदाय को सत्संग सेवा समर्पित किये तथा महान सन्तों द्वारा सर्व शास्त्र के साररुप में सत्संगिजीवन, सत्संगिभूषण, वचनामृत, भक्तचिंतामणी इत्यादि शास्त्रों की रचना करवाये । इस में मानवजीवन के अति उत्तम सद्‌गुणों का खजाना भरा हुआ है । इसके अलांवा जो कुछ बाकी रहजाता है वह शिक्षापत्री नामक ग्रंन्थ में निहित है । शिक्षापत्री यद्यपि लघुकाय ग्रन्थ है तथापि सर्व शास्त्रो की मुकट मणी है । आज के समय में मानवमात्र के लिये आचरण में व्यवहार में विटामीन भरने का काम करने वाली है । शिक्षापत्री द्वारा जो सदाचार मिला है वह मात्र सत्संगियों के लिये है ऐसा नहीं है मानव मात्र के लिये उपयोगी है । समाज के नीचे स्तर से लेकर उच्च वर्ग के लोगों तक सभी के लिये यह शिक्षापत्री दिव्य रसायन रुप है । जीवन व्यवहार में कोई ऐसी वात नहीं है जो इस शिक्षापत्री में समाविष्ट नहीं है । इस शिक्षापत्री के अनुसार आचरण करन वाले किस तरह अपने जीवन में परिवर्तन प्राप्त किये थे – जिस में एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं ।

सौराष्ट्र के लोया गाँव में फेलो नामका एक कोली रहता था । विक्रम संवत १८९६ में वहाँ पर भयंकर दुष्काल पड़ा । दुष्काल के समय को विताने के लिये गरीब दम्पती गुजरात के लिये प्रस्थान किया । पति-पत्नी दोनो भगवान की भजन करते हुये नदी-नाला पार करते हुये चले जा रहे थे । एकवार निर्जन रास्ते में सोने का अलंकार गिरा देखा । पति के मन में हुआ कि यह अलंकार किसी का गिर गया है और मैं अपनी गिरीबी से दुःखी हूँ फिर भी हमारे इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की ऐसी आज्ञा है कि इस तरह से गिरि वस्तु मिले तो कभी नहीं लेना । परंतु गरीबी के कारण त्रस्त मेरी पत्नी के मन में इस आभूषण को लेने की इच्छा हुई तो ? इस तरह विचार करके उस आभूषण पर पैर रखक मिट्टी में दबा दिया । पति का ऐसाकार्य देखकर पत्नी अपनी गति बढाकर पतिसे कहने लगे आप यह क्या कर रहे थे ? प्रारंभ में तो पति देव वात डाल रहे थे लेकिन पत्नी के आग्रह को देखकर वे कहने लगे –

वहाँ एक सोने का आभूसम था, लेकिन मैंने सोचा कि उस सोने के आभूषण से तुम्हारा मन न बिगड जाय इस लिये उसके ऊपर मिट्टी डाल दिया । यह सुनकर पत्नी हंसते हुये कहने लगी । आप इतने कच्चे हैं कि उसे सोने का आभूषण समझे, हमारे विचार से दूसरे के धन और पत्थर मैं कोई अन्तर ही नहीं है । हमारे प्रयत्न से प्रसन्न होकर परमात्मा जो देंगे वही हमारे लिये उत्तम होगा । इस तरह दोनो वात करते चले जा रहे थे । उसी समय सामने से एक घुड़सवार आछा और पूचा कि यहाँ कहीं आपलोगोंने सोने का गिरा हुआ आभूषण देखा है क्या ? हमारे बेटे के गले में से गिर गया है । कोलीभाई ने आभूषण का स्थान बता दिया । स्वंय का आभूषण प्राप्त करके वह अश्वारो ही खूब प्रसन्न हो गया । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और पूछा कि जब आप इसे देखे थे तो लेकर छिपा क्यों नहीं दिये ? यह सुनकर कोली ने कहा कि हम स्वामिनारायण भगवान के सत्संगी है । हम हराम की कोई वस्तु नही लेते । उस घुडसवार को हुआ कि यह भाई जाति से पीछड़े वर्ग है, गरीबी से त्रस्त होकर ही यह स्थलान्तर कर रहा है फिर भी निर्जन स्थल पर मिली वस्तु त्याग करता है, ऐसी नैतिकता इसे कहां से मिली । इस तरह का उत्तम बल, ऐसा पवित्र दिव्य सदाचार शिक्षापत्री में से मिलता है । मानव जीवन को सुव्यवस्थित बनाने के लिये शिक्षापत्री में कोई कोनावाकी नहीं रखा है । परस्पर प्रेम बढे इसलिये शिक्षापत्री में अहिंसा से सदाचार का प्रारंभ किया गया है । शिक्षापत्री में दूसरा सदाचार आता है आहार शुद्धि । आजकल समाज में मनुष्य अनेकों रोगों से पीडित है । इसका मूल कारण आहार शुद्धि का अभाव । आज कल पत्र तत्र रास्ते में, स्टेशन पर, होटल में, दुकान में, लारी पर बेचा जाता हुआ खोराक कितनी निम्नकक्षा का होता है – आरोग्य को ताक पर रखकर तैयार किया जाता है । केवल जीव के स्वाद को ध्यान में रखकर मनुष्य ऐसे आहार को

खाता है। परिणाम स्वरुप नाना प्रकार के रोगों से आक्रांत हो जाता है। इस परिप्रेक्ष्य में शिक्षापत्री दिशा सूचन करती है - आहार शुद्धि, सत्व शुद्धि। यदि आहार शुद्धि रहेगी तो मनुष्य का मन शुद्ध होगा। पवित्र मन में उत्तम विचार स्थिर होता है।

सदाचार में एक महल का भाग होता है। कुसंग का त्याग। आज जनसमाज में अच्छे आदमी भी शराब पीते हैं, जूआ इत्यादि खराब टेव में फंसते हैं। इसका कारण है कुसंग। इसमें भी शिक्षापत्री सूचना देती है कि - चोर, पापी, व्यसनी इनसे भी दूर रहें।

आप को ऐसा नहीं लगता कि स्वच्छता भी सदाचार का एक अंग है। कइबार आप ध्यान से देखें तो मनुष्य पशु की अपेक्षा अधिक गन्दगी करता है। मनुष्य की गन्दकी साफ करन के लिये महानगरों में करोडो रुपये का खर्च करना पडता है। किसी बड़ी बिल्डींग में आप जाइये वहाँ की सीढीयों के किनारे वहाँ पर रहने वाले शिक्षित समाज के लोग जहाँ तहाँ थूकते रहते हैं।

आपना ही नाश करते हैं। जहाँ तहाँ मूल मूत्र करके अपने तथा दूसरे की आरोग्यता की हानि करते हैं। इसी लिये शिक्षापत्री में स्पष्ट मना किया गया है। जन समाज के उपयोग में आनेवाली नदी, तालाब का किनारा, जीर्ण देवालय, रास्ता, वृक्षों की छाया, बगीचा इत्यादि स्थलों पर मल मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिये। थूकना भी नहीं चारिये। शिक्षापत्री में इस तरह के सामान्य वचनों का जनसमाज पालन करे तो आरोग्य में वृद्धि होगी। समृद्धि भी बढेगी इससे सभी सुखी होंगे। यह सभी को सदा याद रखना चाहिये की अपने इष्टदेव ने हमे सर्वसुख का मूल शिक्षापत्री भेंट में दी है।

●

प्रसादी का प्रताप

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

एक दिन श्रीजी महाराज लोया में सुराखाचर के घर विराजमान थे। लींबडी के शेठ चांपसी तथा तलखसिंह एवं सायला के शेट माणकचंद ए तीनो अपने काम से काठियावाड गये हुये थे। वहाँ से वापस आते समय रास्ते में लोया गाँव आया तो उन्होंने विचार किया कि स्वामिनारायण यहीं है ? इन्हें लोग भगवान कहते हैं। आज हम इनकी परीक्षा लेते हैं। ऐसा विचार करके उन्होंने सोचा कि महाराज से ऐसे प्रश्न किये जांय जो उत्तर देने में अशक्य हो, यहाँ सुतरफेणी नहीं होती, यदि हम सभी को सुतरफेणी देंगे तो उहें भगवान मानेंगे।

ऐसा विचार करके वे वहाँ गये जहाँ महाराज विराजमान थे। पैर स्पर्श करके महाराज के पास बैठ गये। श्रीजी महाराज सभी को आदर पूर्वक बैठाये और हाल समाचार पूछे। सभी महाराज से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछे। महाराज उन सभी के प्रश्नों के उत्तर करते जा रहे थे। बहुत देर तक इस तरह के प्रश्नोत्तर हुये।

उसी समय कोई अजनान हरिभक्त आये। वे महाराज के पास भेंट रखे। जो भी भेंट में था उसे उन आगन्तुक तीन मेहमानो में बांट दिये। वे तीनो वहाँ से अपने निवास स्थान पर गये। निवास स्थान पर जाकर घड़े के मुख को खोले तो उसमें सुतरफेणी भरी हुई देखे। यह देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। वे सभी सुतरफेणी का ही संकल्प किये थे। इस लिये स्वामिनारायम भगवानने उन सभी के संकल्प को पूरा किया। अब उन्हें शंका होने लगी कि स्वामिनारायण भगवान है कि जादूगर ये कौन हैं ? यह सुनकर लींबडी के दो शेठों ने कहा कि हम सुतरफेणी नहीं खायेंगे। क्या पता जादूविद्या से लाये हों ? लेकिन सायला के माणेकचंद शेठने कहा कि हमें जो होना हो वह हो हम सुतरफेणी अवश्य खायेंगे। ऐसा कहकर सायला के शेठ माणेकचंद सुतरफेणी खाये। जिसके परिणाम स्वरुप आज भी उनके घर में अच्छा सत्संग चल रहा है। आज भी उनका परिवार सुखी है।

शंका करने वाले कभी सुखी नहीं होते। दोनो शेठ प्रसाद ग्रहण नही किये परिणाम स्वरुप सत्संग सुख से वंचित रहे। सायला के माणकचंद शेठ विश्वासमं आकर प्रसाद ग्रहण किये तो आजीवन सत्संग का सुख प्राप्त किये।

प्रिय भक्तों ! अनेकजन्मों का पुण्य हो तभी भगवान की कृपा मिलती है। और उनके पात्र बन पाते हैं। अन्यथा साक्षात् भगवान भी मिल जायें तो भी आभागे जीव को सुख प्राप्त होना संभव नहीं है। ऐसे लींबडी के दो अभागे शेठों के लिये निष्कुलानंद स्वामी लिखते हैं कि -

स्तन पर जे इतडी, ते पप न पीवे पीवे असकने।
तेम अभागी जीव जेह ते मोक्ष ते इच्छे, इच्छे नरकने ॥

जब कि सायला के माणेकचंद शेठ के लिये यह कहा जा सकता है कि उनका पूर्व का पुण्य उदित हुआ जिससे वे स्वामिनारायण भगवान को प्राप्त कर सके। जिन्हे स्वामिनारायण भगवान मिले या जो स्वामनारायण भगवान को पहचान लिया वह परम भाग्य शाली है। उसका कल्याण होना निश्चित है।

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से
"अच्छा सीखने के लिये निरन्तरं जागते रहना चाहिये"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम ये सभा क्यों करते हैं ? धर्मपालन करते समय जो बाकी रह जाता है उसे सीखने के लिये । जीवन में जब कोई साथ नहीं देता है तब धर्म ही साथ देना है । धर्म ही मनुष्य का सच्चा मित्र है । लेकिन तकलीफ कहां होती है । मनुष्य की चाहना होती है कि बिनाकुछ किये उसे सबकुछ मिल जाय । संयोग वश ऐसे लोगों को ढगने वाले भी मिल जाते हैं । हम ढगे जाते हैं और आंख बंद करके काम करते हैं । यदि सदा जागरुक रहते तो किसकी ताकात है, जो हमें ढग सके । हम कैसे है, आंख बंद करके प्रकाश देखने वाले हैं । यदि प्रकाश देखना है तो आंख खोलना पडेगा ।

इसलिये हमें जागने की जरुरत है । आंख खोलने की जरुरत है । जो कुछ दु:ख आता है वह अज्ञानता के कारण आता है । अज्ञानरुपी निद्रा तूफान के समान होती है । ज्ञान जाग्रत अवस्था की दीवानी की तरह होती है । अज्ञानी लोग जन्मों से सोते ही रहते हैं । जागरुक कमलोग होते हैं । इसका मतलब तूफानी अहंकार के समान होते हैं । अहंकारीव्यक्ति दीपक प्रकट करने जाय तो प्रज्वलित होकर भी बुझजाता है । अहंकार की दीवानगी के कारण दीपक प्रगट ही नहीं हो सकता । परंतु उसे यह ख्याल नहीं रहता कि उससे अहंकार के कारण दीपक प्रगट नहीं हो रहा है अथवा बुझ जाता है । अज्ञानता के अंधकार में अहंकार प्रदीप्त हो उठता है । अज्ञान गाढा होने लगता है । जब बालक सोता है उस समय लोरी गाईजाय तो उसे अच्छी निद्रा आजाती है । इसी तरह हमें भी ऐसे लोग मिल जाते हैं जो हमारी अज्ञानता को और गाढा कर देते हैं । परंतु जो विवेकी होते हैं अच्छे बुरे का जिन्हें ख्याल है उनका कोई कुछ बिगाड नहीं सकता । अच्छे - बुरे का विवेक या विचार बुद्धिमानो को ही होता है, यदि विवेक बुद्धि का उपयोग न किया जाय तो विवेकबुद्धि के ऊपर काट चढ जाती है । सद्विचार मेहमान की तरह होते हैं । विना आमंत्रण के वे आते नहीं हैं । जब आजाते हैं तो अच्छी तरह चिन्तन करते रहना चाहिये । जब खूब गहराई से चिन्तन करेंगे तभी विवेकबुद्धि रुकेगी और कुविचारो से दूर हो पायेंगे । हमारे भीतर कुविचार कहाँ से प्रवेश करते हैं इसका सदा चैतन्यतापूर्वक ख्याल रखना चाहिये । जिन्हें अपने भीतर दोष दिखाई देता हैं उन्हें समझना चाहिये कि उनके ऊपर भगवान की कृपा हो रही है । हम गुणवान कब कहे जायेंगे, जब भगवान के सिवाय किसी प्रकार के अन्य विचार न आवे तो ।

सत्संग के माध्यम से जाग्रत हुआ जा सकता है । हम जब सत्संग मैं बैठे तब नींद आती है और बगलवाला आपको जगा देता है । सत्संग जागरुक रखने में मदद करता है । चेतना शक्ति का स्त्रोत है । ज्ञान-विज्ञान सभी सत्संग में भरा पड़ा है । इधर उधर की ग्राम्य वार्ता से अच्छा तो सत्संग है - जिसके माध्यम से भगवत भक्ति, भगवत परायणता, अच्छे ज्ञान की वात, सद्विचार, सद्विवेक इत्यादि आते हैं । अच्छा सीखने के लिये जागते रहना चाहिये । १५ दिन में एकादशी की सत्संग सभा आती है यह भी सभी को जगाने का काम करती है । लेकिन केवल एकादशी को ही जागें यह ठीक नहीं, इसके लिये १५ दिन तक लगातार जागने रहने की वात है, यावत् जीवन जागते रहने की वात है । मात्र १५ वें दिन जागने से अर्थात् सभा में सत्संग करने से जागना ठीक नहीं है । अन्यथा नींद तो आयेगी और आपको बगल वाला जगायेगा तब आवज जांगें गे । उस समय निद्राधीन की स्थिति में आपको यह ख्याल नहीं आयेगा कि सत्संग सभा में क्या चर्चा हुई । इसलिये सदा जागने की टेव रखनी पडेगी । सत्संग में आगे बढने का प्रयास स्वयं करना पड़ेगा । सत्संग का रंग कम चढता है । कुसंग का रंग जल्दी चढ जाता है । सत्य को समझने की जरुरत है । सत्य क्या है ? परदा के ऊपर या टी.वी. में जो कुछ देखते हैं वह सत्य नहीं होता, यह सभी जानते हैं, फिर भी उसकी असर सभी के मन पर पड़ती है । परदे पर देख कर जैसी घटना होती है उस सन्दर्भ में रोने की सीन हो तो रोने लगते हैं, हंसने का सीन होतो हंसने लगते हैं, परदा के ऊपर धरतीकंप या तूफान दिखाई देता है तो उसकी असर परदा पर नहीं होती । वरसातकी असर भी उस पर नही होती ।

इस तरह सबकुछ देखने के बाद विचार आता है और मन एवं इन्द्रियों पर असर करने लगता है । लेकिन परदे की तरह अपनी आत्मा के ऊपर कुछ भी असर नहीं होता । परंतु अपने भीतर अज्ञानता रुपी निद्रा का आधिक्य है इसलिये कुछ

खबर नहीं पडती । परंतु जिसके जीवन में सत्संगरुपी रंग चढ गया है उसके जीवन में सबकुछ ख्याल आजाता है । सत्संग के माध्यम से जागृत होकर संसार सागर से पार होना संभव है । सत्संग के माध्यम से आत्मा का कल्याण सम्भव है । आत्मासत्य है । परमात्मा अन्दर बैठकर साक्षीभाव से सबकुछ देखते हैं । यह सबकुछ ख्याल आता है । वह सबकुछ बना रहता है । सत्य की शरणागति में सबकुछ लाभ ही लाभ है । सत्संग मात्र अपना कुटुम्ब है । ऐसी भावना आप सभी के मन में परमात्मा दृढ करे ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना ।

•

तमे भावे भजी ल्यो भगवान

- पटेल लाभुबहन मनुभाई (कुंडाल)

तमे भावे भजी ल्यो भगवान, जीवन थोडु रह्युं ।
कंइक आत्मानुं करी लो कल्याण, जीवन थोडुं रह्युं ॥

''मनुष्य देह दुर्लभ छे'' कवि नारायणदासने कीर्तन में मानवीजवन का रहस्य प्रस्थापित किया है ।

''मोंघो मनुष्य नो वारो, फेर फेर नहीं माननारो ।
डाह्या दिलमां विचारो, सत्संग कीजिये ॥

सद्‌गुरु देवानंद स्वामीने मनुष्य की देह को चिंतामणी के समान बताया है । मल्यो मनुष्य देह चिंतामणी रे'' - कोई पूछे कि मनुष्य से सबकुछ प्राप्त किया जा सकता है तो, हाँ । समग्र दुनिया का वैभव, मोक्षभी इसी शरीर से प्राप्त करना सम्भव है । जिस तरह ताला में चाभी लगाकर फेरने पर ताला खुल जाता है । लेकिन विपरीत दिशा में फेरने पर वह बन्द हो जाता है । ठीक वही स्थिति यहाँ भी होती है । महाराज और सत्पुरुषो के समागम से तथा उनकी प्रसन्नतासे आत्यंतिक कल्याण होता है । जब कि उनकी प्रसन्नता न होने पर मनुष्य अधोगति को प्राप्त करता है । इस तरह हमें कौन सा मार्ग पसन्द करना है यह अपने हाथ में हैं ।

''पुरुषोत्तम लीलामृत सुख सागर'' के तरंग-९८ में समग्र मानव जाति से प्रश्न पूछा गया है -

''आवो मनुष्य देह पामीने, प्रभु भज्या नहिं केम ।
मोक्ष पामवा कारणे, आप्यो मनुष्य नो देह ॥

संत लोग हरिभक्तों के घर पदार्पण करने जाते हैं, सभी से वे पूछते हैं कि, भाई मंदिर क्यों नहीं आते ? तब आप उत्तर में कहते हैं कि स्वामी ? इस समय प्रवृत्ति अधिक हो गयी है चाहते हुये भी आना संभव नहीं हो पा रहा है । दूसरा भाई कहता है कि, स्वामी ! हम पूरे दिन धंधे में दोड़ते ही रहते है । इससे मंदिर आने के समय नहीं मिलपाता । इसके अलांवा १२ वीं कक्षा का विद्यार्थी की तरफ से उसका पिता कहता है कि, स्वामी ! इतनी छोटी उम्र में भगवान की भजन कैसी ? भगवान की भजन तो उतरती उम्र में करनी चाहिये । उस समय क्या करोगे ? तब संत कहते हैं कि, इस शरीर का कोई ठिकाना है ? मृत्यु कभी आसकती है, इसका कोई निश्चित नहीं है । लेकिन मृत्यु तो आयेगी, यह निश्चित है ।

''कल करता हो तो कर आज,
आज करता हो तो कर अब ।
आमूल वगरनुं ढोकलुं ढली पडशे जब
फिर करेगा कब ॥

कोमल वृक्ष की तरह सत्संगने की उम्र तो बाल्यावस्था है, इस समय से भजन की टेव डालनी चाहिये । जब बड़े वृक्ष की तरह बड़ी उम्र हो जायेगी तो भजन की सक्यता रहते हुये भी संभव नहीं है । इस लिये प्रारंभ से भजन भक्ति सत्संग करते रहना चाहिये । इससे आने वाली पीढी को लाभ मिलेगा । इस लिये जीवात्मा के कल्याणार्थ कल भजन करेंगे यह भाव छोडकर अभी से भजन करना प्रारंभ कर देना चाहिये । महाप्रभु के यथार्थ स्वरुप की पहचान करलेनी चाहिये । अब जीवन कहाँ ज्यादा बचा है । जितने दिन इधर उधर में समय बिताये; बिताये अब आगे से भजन हो यह जरुरी है । इसके लिये कीर्तन - भजन करलेनी चाहिये -

''कर प्रभु संगाथे दृढ प्रीतडी रे ।
मही जावुं मेलीने धन माला ॥

जिन महाराजने सबसे उत्तम शरीर दिया, जिन महाराजने उससे भी उत्तम सत्संग दिया और उस सत्संग में जन्म दिया, प्रभु भजन के लिये उत्तम से उत्तम वातावरण दिया, तो अब आलस्य त्याग कर, प्रमाद को त्याग कर प्रभु भजनमें आनंद लेना चाहिये । यही आनंद चिर स्थाई रहेगा जन्म जनमांतर का सहारा होगा । यही मनुष्य का चरम कर्तव्य है - इसी लिये तो लिखा है -

कंईक आत्मानुं करी ल्यो कल्याण, जीवन थोडुं रह्युं । भजन भक्ति करके सर्वोपरी भगवान स्वामिनारायण के स्वरुप को पहचान लेना चाहिये । जिन के स्वरुप में मुमुक्षता प्रगट है । महाप्रभु के सुख प्राप्ति की लालसा संसार सागर से मुक्त कर देगी और अब मूर्तिके सुख के अधिकारी होंगे । ब्रह्मानंद स्वामी ने लिखा है कि -

मरना मरना सब कहे, पण मरी न जाने कोय ।
एकदिन ऐसा मरना फिर जनम मरण नव होय ॥

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजाश्री की आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की अध्यक्षता में **"श्री नरनारायणदेव महोत्सव"** का भव्य आयोजन ता. २४-१२-१४से ता. २८-१२-१४ तक किया गया है। जिस के उपक्रम में दो कार्यक्रम रखे गये हैं। जिस में सभी संत हरिभक्तों के सहयोग से यह कार्यक्रम करना है। इस सेवा में सहयोग करके श्रीजी महाराज की प्रसन्नता प्राप्त करें।

गरीबो को गद्दा, रजाई, कम्बल का दान

भगवान श्री स्वामिनरायणने शिक्षापत्री में आज्ञा की है कि "दीनजन के विषय में दयावान बनें"। प्रभु की इस आज्ञानुसार कडकड़ाती ठन्ढी में अनेक गरीब दु:खी होते दिखाई देते है, ऐसे दु:खियों को उस ठन्ठी से रक्षण हेतु हमें कुछ करना चाहिये, यह हमारी मानवता है तथा महाराजकी आज्ञा भी है, अत: इस पवित्र फर्ज को अपना कर्तव्य मानकर कार्य करना है। इसलीये सभी हरिभक्त अपनी शक्ति के अनुसार जो उनके घर में (जिसका उपयोग किया जासके) अथवा बाजार से खरीदकर कम्बल - लगदी जो भी सम्भव हो वह लेकर अपने गाँव के हरिमंदिर में अथवा शिखरी मंदिर में जमा करायें। जो भी कम्बल - आसन- स्वेटर अन्य उपकरण जो ठन्ठी से बचा सके वह एकत्रित करके श्री कमलेशभाई वसोया मो. : ९३२८८६९६४७, श्री चेतनभाई रामाणी के मो. : ९३७४९१८३१२ पर अवश्य जानकारी दें। उसके वितरण की व्यवस्था की जानकारी बाद में दी जायेगी।

मूर्ति व्यवस्था

अपना संप्रदाय उत्सव - तीर्थयात्रावाला संप्रदाय है। जब हरिभक्त तीर्थयात्रा में जाते है, उत्सव में जाते हैं, सेवा करने जाते हैं उस समय संस्था द्वारा सन्तो द्वारा, उन्हें भगवान की मूर्ति भेंट में दीजाती है, अथवा आप स्वयं ले आते हैं, वह मूर्ति समय वीतते डीम होने लगती है या खंडित हो जाती है, अथवा बहुत सारी एकत्रित हो जाने से उसे कहाँ रखे ? ऐसा प्रश्न होता है। इस प्रस्न के उपाय में जो भी मूर्ति हरिभक्तों के पास हों उन मूर्तियों के लिये मदिर द्वारा योग्य व्यवस्था की गयी हैं। तो जिन भक्तों के पास ऐसी मूर्तियां हों उन सभी को अपने पास के मंदिर में जमा करादें। उन एकत्रित मूर्तियों को तत्तद् मंदिर के व्यवस्थापक महोदय मूल मंदिर कालुपुर (ता. १-१२-१४ से ता. ६-१२-१४ तक) में अवश्य जमा करावेंगे। तारीख का ध्यान दिया जाना आवश्यक है। ता. १-१२-१४ से पूर्ण मूर्तियों का स्वीकार करना संभव नहीं है। एकत्रित की गयी इन मूर्तियों की योग्य व्यवस्था प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञानुसार की जायेगी।

विशेष सूचना : कांच में मढी हुई मूर्तियों को कांच से अलग करके केवल मूर्ति लावें।

श्री नरनारायणदेव महोत्सव में विदेश से आनेवाले हरिभक्तोकी व्यवस्था के विषय में

विदेश में रहने वाले सभी भक्तों को जयश्री स्वामिनारायण। आप सभी जानते हैं कि श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव ता. २४-१२-१४ से ता. २८-१२-१४ तक धूमधाम से मनाया जायेगा। आप लोग इस उत्सव में पधारने वाले ही हैं। जो भी भक्त इस उत्सव में पधारने वाले हों वे अपने आने की सूचना अधोनिर्दिष्ट प्रतिनिधियों को अवश्य दें। इसके अलावां रहने की व्यवस्था की जिन्हे आवश्यकता हो वे भी अपनी आवश्यकता का निर्देश करें, जिससे व्यवस्था करने मे सुविधा हो। इसके लिये आप सभी से अनुरोधहै कि आप अपनी सूचना अवश्य दें।

नीचे के हरिभक्तों का संपर्क करें

- जगदीशभाई पटेल (शिकागो-अमेरिका)
- प्रकाशभाई पटेल (कलिवलेन्ड-अमेरिका)
- अशोकभाई हिराणी (मांदडलीवाला-लंडन)
- अवनीशभाई (विल्सडन-लंडन)
- परबतभाई प्रेमजी वेकरीया (नैरोबी)
- भीमजी राबडीया (सीडनी-ओस्ट्रेलीया)
- रमेशभाई वरसाणी (एडीलेन्ड-ओस्ट्रेलीया)
- प्रेमजीभाई खेताणी (पर्थ-ओस्ट्रेलीया)
- बीपीनभाई ठक्कर (भगत) (न्युझीलेन्ड)
- धीरजभाई (केन्टोन-हेरो लंडन)
- भीखाभाई बेलजी गोरसीया (ईस्ट आफ्रिका)
- विषद दवे (सीडनी-ओस्ट्रेलीया)
- दीपकबाई राधवाणी (मेलबोर्न-आस्ट्रेलीया)
- प्रीतेश हीराणी (पर्थ-ओस्ट्रेलीया)
- महेशभाई रत्ना (मुटीस-न्युजीलेन्ड)

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर में दीपोत्सवी के प्रसंग धूमधाम से सम्पन्न हुये

काली चतुर्दशी : श्री स्वामिनारायण मंदिर कालूपुर अमदावाद में बिराजमान श्री कष्टभंजन देव का कालीचतुर्दशी के दिन सायंकाल ६-३० बजे प.पू. आचार्य महाराजश्री के शुभ हार्थो से पूजन अर्चन किया गया था । बाद में श्री हनुमानजी महाराज को अन्नकूट का भोग लगाया गया था । हजारों भक्त दर्शन करके धन्यता अनुभव कर रहे थे । पुजारी महादेव भगत तथा पुजारी बाबू भगतने सुंदर आयोजन किया था ।

दीपावली-समूह शारदा पूजन : परम कृपालु श्री नरनारायणदेव समक्ष दीपावली के दिन ता. २३-१०-१४ को सायंकाल ६-३० बजे संप्रदाय के भावि आचार्य प.पू. १०८ श्री ब्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के वरद हाथों से प्रसादी के सभा मंडप में समूह शारदा पूजन धूमधाम से संपन्न हुआ था । प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी बहुत सारे व्यापारी धंधा-उद्योग के खाता वही का पूजन धर्मनीति पूर्वक शिक्षापत्री के आज्ञानुसार हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना किये थे । अन्त में आरती के बाद आतिशबाजी की गयी थी ।

नूतन वर्ष अन्नकूटोत्सव : संवत् २०७१ के नूतन वर्ष में प्रातः ५-०० बजे परम कृपालु परमात्मा श्री नरनारायणदेव की मंगला आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों संपन्न हुई थी । बाद में बैठक में संत हरिभक्तों को नूतन वर्ष की शुभकामना तथा आशीर्वाद प्रदान किये थे । सभा मंडप में मंदिर के गौर कमलेशभाईने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से श्रृंगार आरती तथा दोपहर में १२-०० बजे श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप के वरद् हाथों से छप्पनभोग - अन्नकूटकी आरती की गयी थी । आज के दिन हजारों भक्त दर्शन के लिये उमड पड़े थे । देव को दशांश-वीशांश भाग अर्पण करके आचार्य महाराजश्री का तथा संतो का दर्शन करके नूतन वर्ष को भव्यता से संपन्न किये थे । पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी के मार्गदर्शन में ब्रह्मचारी स्वा. राजेश्वरानंदजी, हरिचरण स्वामी (कलोल), को. जे.के. स्वामी, हरिचरण स्वामी (छोटे), योगी स्वामी, शा. नारायणमुनिदासजी, भंडारी राम स्वामी, पुजारी भक्ति स्वामी, कोठार स्टाफ, संत-हरिभक्त सभी मिलकर उत्तम सेवा किये थे । - को. शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी

अमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में सत्संगिजीवन पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा अमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजीकी प्रेरणा से प.भ. धीरजीभाई भीखाभाई ठक्कर परिवार के यजमान पद पर ता. २९-१०-१४ से ता. २-११-१४ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु. शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ था । संहिता पाठ में स्वा. धर्मजीवनदासजी बिराजमान थे । कथामृत का रसपान करके हरिभक्त तथा यजमान परिवार धन्य हो गया था । समग्र आयोजन स्वामी हरिचरणदासजी (कलोल) ब्र. राजेश्वरानंदजी, को.जे.के. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, को. शा. नारायणमुनिदासजी, भंडारी स्वामी इत्यादि संत-पार्षद मिलकर सुंदर सेवा की थी । (उर्मिक पटेल

एप्रोच (बापूनगर) श्री स्वामिनारायण मंदिर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से श्री नागजीभाई नानजीभाई शींगाला के यजमान पद पर उन्हीं के कुबडथल गाँव की बाडी में त्रिवेणी सत्संग सभा (श्री नरनारायणदेव पाटोत्सव, प.पू. महाराजश्री का ४२ वाँ प्रागट्योत्सव, एप्रोच मंदिर के दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में) का ता. २१-९-१४ को प्रातः प.पू. लालजी महाराजश्री की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ था । सभा में कालुपुर मंदिर के हरिजीवन स्वामी तथा गवैया हरिभक्तों के मुख से धुन-कीर्तन सम्पन्न होने के बाद कालुपुर मंदिर से पधारे हुये संत जिसमें स्वामी धर्मप्रवर्तकदासजी, स्वा. नारायणमुनिदासजी तथा एप्रोच मंदिर के कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी इत्यादि संतोने प्रासंगिक उद्बोधन किया था । बाद में प.पू. लालजी महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अंत में रासोत्सव के बाद सभी भौजन प्रसाद ग्रहण किये थे ।

विशेष में आश्विन शुक्ल-१ से शरद पूर्णिमातक १५ दिन तक रात्रि में मंदिर द्वारा कीर्तन-भजन के साथ रासोत्सव खूब प्रेरणादायी था । इसका लाभ करीब ८०० से ९०० भक्तोंने किया था । - गोरधनभाई वी. सीतापरा

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामीकी प्रेरणा से रजत जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में भव्य सत्संग सभा का आयोजन किया गया था । इस प्रसंग पर बापूनगर एप्रोच मंदिर के संतोने श्रीहरि की महिमा का गुणगान किया था । अन्त में रात्रि में मंदिर के महंत स्वामीने रजत जयन्ती में जुड़ने के लिये सभी को प्रेरणा दी थी ।

- भीखाभाई - हिंमतनगर

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर (खारवरिया)

खाखरिया के धरमपुर गाँव में आश्विन शुक्ल-१० विजया दशमी को ता. ४-१०-१४ को सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वें जन्मोत्व प्रसंग पर उन्ही की प्रतिमा रखकर भजन कीर्तन, धुन करके आरती करके सभी को प्रसाद वितरण किया गया था । गाँव के सभी भक्त इसका लाभ लेकर कृतकृत्य हो गये थे। - कोठारीश्री

खेरोल (प्रांतीज देश)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से खेरोल गाँव में सुंदर सत्संग सभा में हिंमतनगर मंदिर के महंत स्वामीने श्री नरनारायणदेव की महिमा तथा धर्मकुल की महिमा का गुणगान किया था । इसके साथ हिंमतनगर मंदिर के रजत जयंती महोत्सव की जानकारी दी थी । युवक मंडलने धुन कीर्तन करके सभी को आनंदित किया था ।- पटेल रमेशभाई वी.

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (पाटीदार)

श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा (पाटीदार) के ७० हरिभक्तों ने ता. ४-९-१४ को सापावाडा से, इडर से टोरडाधाम तक पदयात्रा करके दर्शन का महालाभ लिया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा तलपद के हरिभक्तोंने श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. २९-८-१४ से ता. ३०-८-१४ तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र तथा श्री हनुमानजी महाराज की धुन ३६ घन्टे तक की गयी थी । जिस में गाँव के भक्त साथ में जुडे थे । अन्त में सभी को प्रसाद में भोजन दिया गया था ।- को. बलदेवभाई पटेल पाटीदार मंदिर

श्री स्वामिनारायण मंदिर करजीसण सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्रीहरि के दिव्य चरणों से अंकित पावन भूमि करजीसण के श्री स्वामिनारायण मंदिर में ता. १६-९-१४ की रात्रि में माधव स्वामी (सिद्धपुर गुरुकुल) ने समस्त गाँव को तथा बाहर से आये हरिभक्तों को कथाश्रवण का लाभ दिया था । सोजा गांव के युवक मंडलने भजन-कीर्तन की थी । - को. करजीसण

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (सेक्टर-२) बहनो की सत्संग सभा

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी के अध्यक्ष स्थान पर श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो के) गांधीनगर सेक्टर-२ में ता. ११-१०-१४ को बहनो की भव्य सभा आयोजित की गयी थी . जिस में सां.यो. बहनें कथा वार्ता की थी । अन्त में प.पू. गादीवालाजीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थीं । सभापूर्ण होने के बाद अ.सौ. सांताबहन गोरधनभाई पटेल (मुबारकपुरावाला) कृते प्रियंकाबहन बिजयभाई पटेल तथा सत्संग सभा के यजमान नीलम बहन हरिकृष्णभाई राणा, पवित्राबा (धरमपुर भुंडीया) इत्यादि परिवार के बहनोने प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीका पूजन-अर्चन करके आशीर्वाद प्राप्त की थी । विशाल संख्या में बहने सभा का लाभ ली थी । - श्री नरनारायणदेव महिला मंडल गांधीनगर से-२

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में गांधीनगर (सेक्टर-२) मंदिर में अखंड धुन तथा शरदोत्सव सम्पन्न

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित २५१ गाँवों में १५१ मिनिट की अखंड धून के अन्तर्गत गांधीनगर सेकटर-२ श्री स्वामिनारायम मंदिर में महंत स्वामी पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से १५१ मिनिट की धुन ता. १९-१०-१४ रविवार एकादशी को दोपहर २-३० बजे से ५-१० तक की गयी थी । जिसमें महादेवनगर, दहेगाँव, जुंडाल इत्यादि गाँवो के हरिभक्त भाग लिये थे । पूर्णाहुति के बाद महंत स्वामीने उत्सवकी जानकारी दी थी । समग्र आयोजन में स्वा. चैतन्यस्वरुपदास, स्वा. दिव्यप्रकाशदास, हरिप्रकाश स्वामी तथा नरनारायण युवक मंडल तथा महिला मंडलने सेवा की थी। - बाबूभाई मगनभाई - गांधीनगर

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा यहाँ के हरिभक्तों के सहयोग से ता. ८-१०-१४ को श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर के भव्य पटांगण में शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री संत मंडल के साथ पधारे थे । इस प्रसंग के यजमान प.भ. राकेशभाई मंगलदास पटेल (जुंडालवाला केनेडा) परिवार था । करीब २० गाँवो से २००० जितने भक्त परिवार लाभ लिये थे । प.पू. लालजी महाराजश्री का यजमान परिवार ने पूजन-अर्चन किया था । संतो मे - स.गु. महंत शा. स्वा. हरिकृष्णदासजी, महंत स्वा. देवप्रकाशदासजी, स्वा. नारायणवल्लभदासजी, स्वा. रामकृष्णदासजी इत्यादि संतोने अपनी प्रेरक वाणी का सभी को लाभ दिये थे । अंत में सभी प्रसाद ग्रहण किये थे । सभा संचालन शा. स्वा. चैतन्यस्वरुपने किया था । - पुजारी दिव्यप्रकाश स्वामी, हरिप्रकाश स्वामी

हीरावाडी में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा हीरावाडी श्री नरनारयणदेव युवक मंडल के आयोजन से आगामी श्री नरनारायणदेव महोत्सव तथा एप्रोच (बापूनगर) मंदिर का दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १९-१०-१४ को प्रार्थना एपार्टमेन्ट के ग्राउन्ड में सत्संग सभा का सुंदर आयोजन किया गया था । कीर्तन भक्ति के साथ हरिकृष्णदास (एप्रोच) स्वामी, चैतन्य स्वामी, छपैयाप्रसाद स्वामी, स्वा. रामकृष्णदासजी तथा अमदावाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी ने प्रसंगोचित

प्रवचन में श्री नरनारायणदेव के महोत्सव में तन, मन, धन से सहयोग करने का अनुरोधकिया था ।- गोरधनभाई सीतापरा

हिंमतनगर में कथा पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से तथा प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवालाजी के आशीर्वाद से तथा सांख्ययोगी कमलाबा की प्रेरणा से तथा समस्त महिला मंडल के सहयोग से ता. १९-८-१४ से २३-८-१४ तक श्री जनमंगल स्तोत्र पंचान्ह पारायण सां. कोकिलाबा के वक्तापद पर हुआ । पोथीयात्रा धूमधाम के साथ निकाली गयी थी । अनेक धामों से सां.यो. बहने पधारी थी । रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम भी किया गया था । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वें जन्मोत्सव पर तथा १० वर्ष गादी के ऊपर पदारुढ होने पर, गादीवालाजी श्री १० वर्ष गादीपदारुढ होने पर ''गादी दशाब्दी महोत्सव के अन्तर्गत ता. २४-१०-१४ को समूह महापूजा की गयी थी । जिसकी यजमान मलीबहन गोविंदभाई थी । जिसमें २८० बहनों ने लाभ लिया था । सभी बहनों की सेवा प्रेरणारुप थी । ठाकुरजी की समूह में अन्कूट आरती की गयी थी । सभा संचालन उषाबाने किया । सभी बहने कथामृतपान करके धन्यता का अनुभव कर रही थी ।

-डाहीबहन, नीलाबहन पटेल

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु वयोवृद्ध संत हरिप्रकाशदासजी तथा माधव स्वामी की प्रेरणा से एवं महंत स्वामी के मार्गदर्शन में नारायणपुरा मंदिर में जलझूलनी एकादशी का उत्सव तथा श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था । जलझूलनी एकादशी को भव्य सोभायात्रा निकाली गयी थी ।इसके यजमान प.भ. ओध्वजीभाई जादवजीभाई पटेल थे । भगवान का रात्रिवास यजमान के घर हुआ था । बी.डी. राव होल में श्री जयेशभाई सोनी का कीर्तन रखा गया था ।

ता. २९-८-१४ से ३-९-१४ तक मंदिर में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण रखा गया था । जिस में वक्ता स्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी (माणसा) थे । माधव स्वामीने शुभेच्छा प्रवचन किया था । कथा के यजमान राजुला के नागदान सोनी थे । पूर्णाहुति प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । महंत स्वामीने आभार विधिकी थी । - पटेल घनश्यामभाई उवारसदवाला

श्री स्वामिनारायण मंदिर विराटनगर (बहनोका)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के ४२ वें प्रागट्योत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजीकी आज्ञा से तथा सां.यो. रंजनबा की प्रेरणा से विराटनगर महिला मंडल द्वारा ता. १५-८-१४ से १५-९-१४ तक सायंकाल ४-३० से ६-३० तक श्री स्वामिनारायण महामंत्र धून की गयी थी ।

- नानीबहन

श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबापुर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अंबापुर गाँव में अमदावाद मंदिर से पुराणी स्वा. धर्मजीवनदासजी तथा योगी स्वामी पधारे थे । लगातार १५ दिनतक श्री नरनारायणदेव की महिमा का रहस्य प्रतिपादन किया गया था । योगी स्वामी की प्रेरणा से श्री नरनारायणदेव युवक मडंल जुंडाल द्वारा एक दिवसीय कीर्तन का कार्यक्रम रखा गया था ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, अंबापुर

कनीपुर गाँव में १५१ मिनट की अखंड धुन तथा सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कनीपुर गांव में १२-१०-१४ को श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में १५१ महामंत्र की अखंड धुन की गई थी । इसके बाद सभा मे पू. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत छोटे पी.पी. स्वामी, छपैया स्वामी, चैतन्य स्वामी इत्यादि संतोने महोत्सव की रुपरेखा के साथ धर्मकुल की प्रतिनिष्ठा एवं श्रीहरिकी महिमा का वर्णन कीया था ।

नरोडा, दहेगाँव, नांदोल, मुवाडा, महुन्द्रा, धमीज, वहेलाल के हरिभक्तों ने सभा का लाभ लिया था ।

- श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, नरोडा

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से अधोनिर्दिष्ट गाँवो में श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा धार्मिक प्रवृतियां की गयी थीं

साबरमती महिला मंडल : मंत्रलेखन-४१७०००००, वचनामृत पारायण-४७, भक्तचिंतामणी पारायण-३८, शिक्षापत्री पारायण-२५००, प्रदक्षिणा-७८०००, श्रीजनमंगल पाठ-३९०००, माला-३३०००, दंडवत-२१७०० ।

अंबापुर महिला मंडल : मंत्रलेखन-२३६०००, वचनामृत पारायण-८, भक्तचिंतामणी पारायण-२, शिक्षापत्री पारायण-३२००, प्रदक्षिणा-११५०००, श्रीजनमंगल पाठ-२००००, माला-७०८००, दंडवत-१९१०८ ।

पोर महिला मंडल : मंत्रलेखन-११०००००, वचनामृत पारायण-११, भक्तचिंतामणी पारायण-२, शिक्षापत्री पारायण-७००, प्रदक्षिणा-६०००, श्रीजनमंगल पाठ-४२०२, माला-१८७००, दंडवत-३२२५ ।

मोटेरा महिला मंडल : मंत्रलेखन-२५३०००, वचनामृत पारायण-१९, भक्तचिंतामणी पारायण-१२, शिक्षापत्री पारायण-१२००, प्रदक्षिणा-२२२९५, श्रीजनमंगल पाठ-१५३००, माला-१८५००, दंडवत-११५०५ ।

चांदखेडा-हीरामोती महिला मंडल : मंत्रलेखन-४४००००, वचनामृत पारायण-१३, भक्तचिंतामणी

पारायण-१, शिक्षापत्री पारायण-१३००, प्रदक्षिणा-१४०००, श्रीजनमंगल पाठ-८७००, माला-४८०००, दंडवत-६७००।

डी-केबीन काली महिला मंडल : मंत्रलेखन-४१६०००, वचनामृत पारायण-४५, भक्तचिंतामणी पारायण-३५, शिक्षापत्री पारायण-२३००, प्रदक्षिणा-४५५००, श्रीजनमंगल पाठ-३६५५०, माला-३०६००, दंडवत-२१२००।

जमीयतपुरा-कुडासणा-आदरज महिला मंडल : मंत्रलेखन-२४२०००, वचनामृत पारायण-३, भक्तचिंतामणी पारायण-२, शिक्षापत्री पारायण-१३५, प्रदक्षिणा-२३७००, श्रीजनमंगल पाठ-३१००, माला-१६५००, दंडवत-१०१००।

– नयनाबहन एस. पटेल साबरमती

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार
नवा मालणीयाद (ता. हलवद)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से नरनारायण नगर नवा मालणीयाद गाँव में प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी की उपस्थिति में महापूजा का आयोजन किया गया था। ता. १२-१०-१४ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। उस समय वहाँ की बहनोंने बड़ी धूमधाम के साथ स्वागत किया था। इस धर्म सभा का आयोजन सां.कंचनबा (धांगध्रा) तथा हलवद बहनो के मंदिरमें रहने वाली सां. कंचनबा की शिष्या, मधुबा, रीटाबा, मनीषाबा, अंकिताबा इत्यादि लोगो ने किया था। धर्मसभा में अनेकों धाम से सां.यो. बहने पधारी थी। सभीने स्वामिनारायण भगवान का माहात्म्य तथा धर्मकुल का महत्व समझाया था। सभा में उपस्थित सभी बहनों को प.पू. गादीवालाजीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था। यहाँ की सां.यो. बहनों की सुंदर प्रवृत्ति देखकर प.पू.अ..सौ. गादीवालाजी खूब प्रसन्न हुई थी।

–बहनोंकी तरफ से अनिल दुधरेजिया

विदेश सत्संग समाचार
श्री स्वामिनारायण मंदिर वोशिंग्टन डी.सी.

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकुल के आशीर्वाद से कालुपुरधाम श्री स्वामिनारायण मंदिर वोशिंग्टन डी.सी. में स्वामी व्रजभूषणदासजी के मार्गदर्शन में दीपावली का उत्सव धूम-धाम से मनाया गया। रविवार एकादशी को हरिभक्त कथा-धून-भजन-चेष्टा-आरती तथा सुंदर कांडका पाठ किये थे। काली चतुर्दशी को श्रीहनुमानजी का पूजन किया गया था। दीपावली के दिन श्री घनश्याम महाराज का सिंहासन अलंकृत करके शारदापूजन किया गया था। नूतन वर्ष के दिन प्रातः काल मंगला आरती, श्रृंगार आरती तथा १५० प्रकार की मिठाई एवं अन्य व्यंजनो का भोग लगाया गया था। प्रातः से सायंकाल तक करीब ४०० जितने भाई-बहन दर्शन का लाभ लिये थे।। सभी को प्रसाद का भोजन कराया गया था। सभी की सेवा प्रेरणारुप थी।

– को. श्री डी.सी. मंदिर

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

महेसाणा : श्री स्वामिनारायण मंदिर महेसाणा में ठाकुरजी की सेवा पूजा करने वाले पुजारी स्वामी हरिप्रियदासजी गुरु शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदाजी (जेतलपुरधाम) ता. १०-१०-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुये अक्षरनिवासी हुये है, उनके अक्षरधाम से महेसाणा के सत्संग में बहुत बड़ी कमी हुई है।

अमदावाद (साबरमती) : प.भ. ललीतकुमार लालभाई पटेल ता. २६-९-१४ को तथा कोकिलाबहन ललीतकुमार पटेल ता. २७-९-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

डांगरवा : प.भ. जेठालाल लालदास पटेल (उम्र ९२ वर्ष नारणपुरा मंदिर में नियमित दर्शन करने वाले) ता. १२-१०-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

निकोल-अमदावाद : प.भ. सुखडिया समजुबहन नाथाभाई (उम्र ९० वर्ष) ता. १३-१०-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

ओढव-अमदावाद : प.भ. रमेशभाई मधुभाई सुखडीया (उम्र ५१ वर्ष) ता. ३०-०९-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

नांदोल : प.भ. रमणभाई छोटाभाई पटेल ता. १५-१०-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

चांदखेडा : प.भ. भावसार पार्वतीबहन हरिभाई (पेथापुरवाला) ता. १३-१०-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई है।

अमदावाद-हाथीखाना नवावास : प.भ. कांतिलाल लीलाचंद भावसार ता. २४-१०-१४ को कार्तिक शुक्ल-१ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

नवा मालणीयाद (हलवद) : प.भ. देलवाडी प्रभुभाई रत्नाभाई (उम्र ५८ वर्ष) ता. १३-९-१४ को श्रीहरिका अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) विराटनगर में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के निमित्त १५१ मिनट की धून के प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री । (२) बावला मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री । (३) अमदावाद मंदिर में पारायण प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान परिवार । (४) नारायणघाट मंदिर में पारायण प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री की आरती उतारते हुये यजमान परिवार । (५) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के निमित्त राजकोट में सत्संग सभा । (६) अमदावाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव महोत्सव के निमित्त समिति को नियुक्तिपत्र देते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री । (७) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के निमित्त महोत्सव स्थल पर निरीक्षण करते हुये प.पू. महाराजश्री । (८) प.भ. डॉ. जी.के. पटेल (महेसाणा) के १७५ वीं बार रक्तदान के प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा साथ में मंत्रीश्री नीतिन पटेल तथा महेसाणा मंदिर के महंत स्वामी । (९) अमदावाद मंदिर में श्री नरनारायणदेव के समक्ष परंपरागत प्रति वर्ष की तरह प्रबोधिनी एकादशी को सम्पूर्ण रात्री श्री नरनारायणदेव अन्नकूट मंडल द्वारा उत्सव । (१०) श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष्य में मेघाणीनगर में सत्संग सभा ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/12-14 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2014

सलकी गाँव में श्रीजी महाराज के समकालीन हरिभक्तों के वंशज के परिवार के बालको को दीपावली के निमित मिठाई तथा फटाका का वितरण करते हुये हरि के वंशज प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू. श्रीराजा।

Jagadish Offset
Praful Khanani